5621

बम्बरु

मुण्डारी कविताओं का संग्रह

दुलाय चन्द्र मुण्डा

अंगार

(मशाल)

गुण्डाही कविताओं का संग्रह

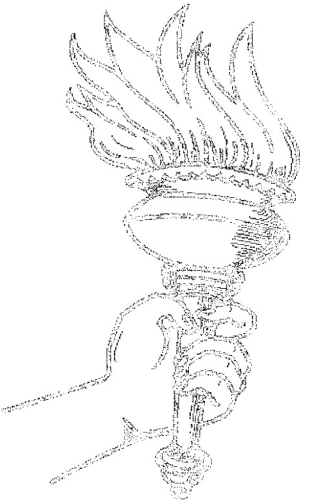

कवि

दुलाराम सजन मुण्डा

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 55/-

प्रकाशन वर्ष : 2012

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, राँची

मुण्डा युवक - युवतियों, रसिकों

और

साहित्य प्रेमियों को

सादर समर्पित

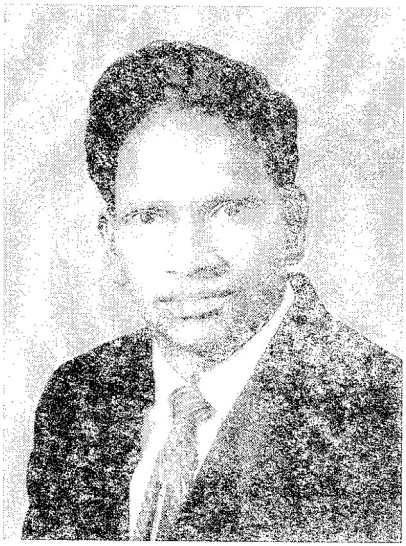

दुलाय चन्द्र मुण्डा

उद्गार के चन्द शब्द

"सुड़ा संगेन" के बाद यह मेरी दूसरी प्रकाशित कृति है। इसका नाम मैंने 'बम्बरू' (मशाल) रखा है। बम्बरू याने मशाल क्रान्ति का प्रतीक है। और इस प्रयास को भी मैं एक क्रान्तिकारी प्रयास मानता हूँ। क्योंकि सदियों से मुण्डा भाषा मौखिक परम्परा पर ही फूलती-फलती आ रही है। पुस्तकों का अभाव रहा है और इसी अभाव के कारण मुण्डा भाषा और संस्कृति भारत की आदि भाषा और संस्कृति होने के बावजूद सदा खतरों से जूझती आ रही है। इधर हाल में मुण्डा भाषा में कुछ मौलिक कृतियों, और लोक गीतों एवं लोक कथा कहानियों का प्रकाशन हुआ है। मेरी यह कृति भी मुण्डा भाषा, साहित्य और संस्कृति की सुरक्षा और विकास में योगदान देगी। ऐसा मानता हूँ अपनी रचनाओं के विषय में मैं अधिक कहना नहीं चाहता—पाठक ही स्वयं इनका मूल्यांकन करेंगे।

पुस्तक के रूप में आने के पहले से ही मुण्डा युवक युवतियां मेरी कतिपय रचनाओं में अखाड़े की शोभा बढ़ाते आ रहे हैं। मैं सर्व प्रथम उन सब को धन्यवाद देता हूँ।

गुरुवर प्रो0 डी0 ललिता प्रसाद विद्यार्थी, अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग राँची विश्वविद्यालय और अध्यक्ष "टेन्थ इन्टरनेशनल कांग्रेस आफ एन्थ्रापालॉजिकल एन्ड एथनोलॉजिकल साइन्स" के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ, क्योंकि उन्होंने इसकी भूमिका लिखने की उत्सुकता जाहिर की। और सच कहा जाय तो यह कृति उन्हीं की प्रेरणा की देन है।

मुण्डारी लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डा0 दिलबर हंस का मैं अभारी हूँ क्योंकि वे हमेशा मेरे रचनात्मक कदम की सराहना करते रहते तथा प्रेरित करते रहते हैं।

मुण्डारी साहित्यकार और प्रसिद्ध समाज सेवक श्री भइया राम मुण्डा और भूतपूर्व बन एवं कल्याण मंत्री श्री तीडू मुचिराय मुण्डा के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। क्योंकि उनके प्रेरणाप्रद सुझाव मेरे मार्ग दर्शक बन गये हैं।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री राधा कृष्ण जी (भूतपूर्व सम्पादक आदिवासी साप्ताहिक) का भी मैं बड़ा आभारी हूँ। उन्होंने न केवल मेरी रचनाओं को प्रकाशित करने में सहयोग दिया बल्कि मेरी साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योग दिया है।

आदिवासी जन जीवन से प्रभावित, और भगवान बिरसा मुण्डा एवं सरदार आन्दोलन के शोध विद्वान तथा छोटानागपुर के आयुक्त डा० कुमार सुरेश सिंह के प्रति भी मैं अपना आभार अर्पित करता हूँ क्योंकि उन्होंने न केवल इस साहित्यिक कृति की सराहना की है बल्कि वे साहित्य के विकास के अलावा सामाजिक उत्थान के लिए भी मूल्यवान सुझाव देते रहते हैं।

गुरु श्री जगदीश त्रिगुणायत्त को मैं कैसे भुला सकता हूँ! वास्तव में मेरे कुंवारे मन मस्तिष्क रूपी खेत में साहित्य के बीज बोने वाले प्रथम कृषक तो ये ही हैं। उनके बोये बीजों की ही तो ये सब उपज है। अतः इनके प्रति मैं हार्दिक आभार अर्पित करता हूँ।

"बम्बरू" पर विभिन्न प्रकार के साहित्यकारों की मिली जुली आलोचनात्मक प्रतिक्रियाएँ और शुभेच्छाएँ उभरी है। इनसे मुझमें नई चेतना के साथ-साथ साहित्य सेवा की नई अभिरूचि भी जगी है। अतः श्री सुशील कुमार (सम्पादक, आदिवासी साप्ताहिक), प्रो० डा० राम दयाल मुण्डा (मिनीसोटा विश्वविद्यालय, यू० एस० ए०) श्री कार्तीनाथ सिंह मुण्डा (आकाश वाणी, राँची श्री ध्रुवदेवश्वर अनुज (पत्र-प्रतिनिधि नव भारत टाइम्स) इन सब को मैं सामुहिक धन्यवाद देता हूँ।

पत्नी श्रीमती प्यारी, प्रियंवदा की सेवा को भी भुलाया नहीं जा सकता। क्योंकि उन्होंने गृह कार्य को संभालती हुई भी इसकी पांडुलिपि तैयार करने और अनुवाद करने में मेरी मदद की है। इसलिये वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में, बल्कि किसी भी हालत में कम नहीं, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् (शिक्षा विभाग, बिहार सरकार) के निदेशक और विद्वान सदस्यों का आपार कृतज्ञ हूँ। क्योंकि उनकी कृपा से ही यह मामूली कृति मूल्यवान साबित हो सकी है।

पुनश्च, मॉडर्न आर्ट प्रेस-राँची के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र प्रसाद जी और कर्मचारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने प्रेस के कार्यों की व्यस्तता के बावजूद इसको छापने में उत्सुकता पूर्वक सहयोग प्रदान किया है।

दुलाय चन्द्र मुण्डा

बारडीह

अगस्त 25, 1978

दो शब्द

दक्षिण-पूर्व एशिया में अस्ट्रॉलॉयड (आग्नेय) प्रजाति की जातियाँ केन्द्रित हैं। भारत के मूल निवासी भी इसी प्रजाति से संबंधित और समस्त उत्तरी भारत में ये विभिन्न कबीलों में फैले हुए हैं। मुण्डा आदिवासी इसी प्रजाति परिवार की एक विशिष्ट जाति है जो बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और त्रिपुरा में निवास करती है। फिर भी मुण्डाओं की घनी आबादी बिहार के छोटानागपुर प्रमंडल के राँची जिला में मिलती है।

मुण्डाओं की अपनी मुण्डा भाषा है। मुण्डा भाषा उतनी ही पुरानी है जितनी कि मुण्डा जाति। आश्चर्य की बात है कि मौखिक परम्परा (ओरलट्रेडिशन) पर आधारित होने के बावजूद यह भाषा जीवित हैं---जहाँ कि कितनी ऐसी भाषा या बोलियाँ मिट सी गई हैं। इसने अपना विकास स्वयं किया है और इसका अपना अलग अस्तित्व है। यह किसी भी भाषा से बहुत कम प्रभावित हुआ है। श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा का यह कविता संग्रह जिसको इसने 'बम्बरू' (मशाल) नाम दिया है, इसी भाषा की लिपिबद्ध, लयबद्ध और ताल-बद्ध कृति है।

मुण्डा आदिवासी अपनी भाषा को "होड़ो-जगर" भी कहते हैं। यह भाषा अन्य सम्बन्धित बोलियों की अपेक्षा अधिक क्लिष्ट जान पड़ती है, और इस बदलते परिवेश में भी अपनी मौलिक विशेषताओं को मुण्डाओं ने अक्षुण रखा है। लेकिन क्षेत्र विशेष के आधार पर इस मुण्डारी भाषा पर बाहय प्रभाव में कमी-वेसी हुआ है।

मुण्डारी क्षेत्र को हम चार परिक्षेत्र में विभाजित कर सकते हैं, यथा, हसादः, नगुरी, तमड़िया और केरः मुण्डारी। हसादः बोली खूँटी, मुरहू और अड़की (तमाड़) प्रखण्ड तथा सिंहभूम के बन्दगाँव, चक्रधरपुर और खरसवाँ प्रखण्ड के मुण्डाओं द्वारा बोली जाती है। कहना न होगा इसी बोली में मुण्डा भाषा की मौलिकता मौजूद है। क्योंकि इस बोली के उच्चारण में भी क्लिष्टता है और बाहय प्रभाव भी अपेक्षाकृत कम है। इस क्षेत्र में अभी भी ऐसे गाँव मिलेंगे जहाँ के अशिक्षित मुण्डा अपनी बोली के अतिरिक्त किसी अन्य बोली से अवगत नहीं है।

दूसरी बोली नगूरी बोली कही जाती है। यह बोली राँची जिला के कर्रा, तोरपा, लापुङ, रनिया, बानो, कोलेबिरा और सिमडेगा इलाके में तथा उड़ीसा के सुन्दरगढ़

इलाके के मुण्डाओं में प्रचलित है। इन इलाकों के मुण्डाओं की विशेषता यह है कि वे मुण्डारी बोली के साथ-साथ सदानी या नागपुरी भी बोलते हैं। इसलिए इस क्षेत्र की मुण्डारी बोली में सदानी या नागपुरी का सम्मिश्रण हो गया है।

तीसरी बोली कुडिया मुण्डारी जो तपाड़, बुन्डु और सोनाहातु प्रखंड के मुण्डाओं की बोली है। इस क्षेत्र में बांगला मिश्रित पंचपरगनिया बोली की प्रधानता है। इस लिए इस क्षेत्र की मुण्डारी बोली के उच्चारण में पंचपरगनिया बोली की छाप पड़ गई है। मुण्डा या मुण्डारी की चौथी उप बोली राँची के ईर्द गिर्द के मुण्डा और उराँव आदिवासियों की बोली है। इस बोली की विशेषता यह है कि इसकी क्रिया में ए: ध्वनि की प्रधानता है। इसलिए यह बोली को केर: बोली कहते हैं। इस बोली में भी नागपुरी या सदानी बोली का काफी प्रभाव है।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मुण्डा भाषा की उप बोलियों में 'कुडाख' बोली में भाषा की क्लिष्टता अधिक है। मेरा अध्ययन गलत भी हो सकता है पर मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि मुण्डा भाषा एक प्राचीनतम भाषा है और अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को मुण्डा जाति ने अपनी भाषा के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है।

मुण्डा आदिवासी अपनी संस्कृति के धनी हैं। इनके रहन-सहन, इनके आचार-व्यवहार तथा पूजा-पाठ इनके अपने हैं। ये प्रकृति की गोद में रहते हैं और प्राकृतिक सौंदर्य की अपने इर्द गिर्द झलकती है। ये वास्तव सरल स्वभाव के हैं और छल कपट से परे हैं। ये अपने श्रम और संघर्ष के बल पर आगे बढ़ते जा रहे हैं।

मुण्डा गीतों के बड़े प्रेमी और धनी होते हैं। इनके सामाजिक जीवन में नृत्य-गान का विशेष स्थान है। पर्व-त्योहारों की ये उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। क्योंकि इनके नृत्य गीत, पर्व त्योहार विशेष से संबंधित हैं। पर्व-त्योहारों के शुभअवसरों पर तो गाँव के अखाड़े में नाच गान होते हैं- खेत में काम करते, राह चलते और मेला जतराओं के अवसरों पर भी मुण्डा युवक-युवतियाँ गीत गाते तथा बांसुरी बजाते देखे जा सकते हैं।

लेकिन आज के शिक्षित मुण्डा युवक-युवतियाँ इस गीत परम्परा को छोड़ते जा रहे हैं। मुण्डा समाज में बरे हजारों-हजार लोक गीत आज सिर्फ अशिक्षित मुण्डा युवक-युवतियों के बीच में सुरक्षित हैं। लेकिन कब तक सुरक्षित रहेंगे! लोक-जीवन के अस्तित्व को बचाए रखने में लोक गीत और लोक कथाओं का विशेष योगदान

है। इसलिए इनकी रक्षा अनिवार्य हैं। डब्लू0 जी0 आर्चर की पुस्तक "मुण्डा-दुरङ" (मुण्डा-गीत), और श्री जगदीश त्रिगुणायत की "बाँसुरी बज रही", "सोसो बोंगा" तथा "मुण्डा लोक कथा संग्रह" नामक पुस्तक लोक गीतों और लोक संस्कृति को विलुप्त होने से बचाने में बड़ा कारगर साबित हुई है।

मुण्डा समाज में लिखने पढ़ने और साहित्य सृजन की परम्परा बहुत बाद में आई है। इसलिए लिखित साहित्य का अभाव है। बुदु बाबू जैसे गीत कार की ही देन है कि मुण्डाओं में गीतकार पैदा हो गये हैं। लेकिन लिखित साहित्य के अभाव में असुरक्षित ही रहे। बाद में कुछ सुशिक्षित नव-युवक अपने इस गीत परम्परा की महत्ता को समझे हैं और ये न केवल लोक गीतों के भक्त है बल्कि नयी गीत-कविताओं से अपने साहित्य को समृद्ध बनाने में कटिबद्ध भी है। ऐसे नवयुवकों में, यहाँ तक मेरी जानकारी हैं, श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा और श्री राम दयाल मुण्डा अग्रणी हैं। इन्होंने कई मौलिक पुस्तकें भी लिखी हैं और इनके गीत लोक गीत के रूप में प्रचलित होते जा रहे हैं।

श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा की यह पुस्तक "बम्बरू" (मशाल) दूसरी प्रकाशित कृति है। पहली पुस्तक "सुड़ा-संगेन" (नव पल्लव), कल्याण विभाग, बिहार सरकार की ओर से 1966 ई. में ही पुरस्कृत तथा प्रकाशित हो चुकी है।

श्री दुलाय मेरा शिष्य भी है, इस लिए इसके स्वभाव से मैं भली-भाँति परिचित हूँ। इसमें कवित्व का गुण है। इसका व्यक्तित्व जिस प्रकार सरल है उसी प्रकार इसकी रचनाएँ भी अत्यन्त सरल हैं। लेकिन इस सरलता में गुढ़ता कविता की हर पंक्ति में छिपी हुई है।

श्री मुण्डा के "बम्बरु" के गीतों में ताजगी है। भलेही इसके गीतों में परम्परागत गीत शैली हैं, फिर भी नवीन और प्रभाव कारी लगते हैं। देश प्रेम जाति-प्रेम, संस्कृति प्रेम, सामाजिक उत्पीड़न और विरह-मिलन इसके गीतों की विशेषता है। एक ओर जहां श्री मुण्डा अपने गीतों के माध्यम से अपने आदिवासी भाईयों को बदलते युग के साथ चलने का आह्वान करता है (गीत सं0 27) तो वही दूसरी ओर अपनी मौलिक संस्कृति की रक्षा के लिए नयी पीढ़ी के युवक युवतियों को प्रेरित भी करता है (गीत सं0 28)। इसी प्रकार एक से एक गीत के नमूने है। जिनकी अपनी-अपनी विशेषता है। फिर भी जिन रचनाओं में इसके कवित्व के गुण लक्षित होते हैं वे हैं प्रेम और विरह-मिलन के गीत।

श्री मुण्डा विज्ञान के अच्छे शोधकर्त्ता भी हैं इसने शोध कार्य के समय बिहार और मध्य प्रदेश के आदिवासियों और हरिजनों की समस्याओं को बहुत करीब से देखा है--- और इसका कवि हृदय काफी प्रभावित हुआ है एक प्रकार से इसकी रचनाओं में आदिवासी समस्याओं की छवि ढूँढ़ी जा सकती है। श्री मुण्डा इस प्रकार से, एक साथ कवि, गायक, साहित्य निर्माता और मानव विज्ञान के व्याख्याता के गुणों को संयोया है।

यह पुस्तक, जिस प्रकार इसका नाम करण (बम्बरु) हुआ है, सटीक जान पड़ता है, क्योंकि इस पुस्तक के प्रत्येक गीत में जाज्वल्यमान ज्योति निकलती है। यह बम्बरु या मशाल किसी को जलाकर भस्मसात करने का नहीं है, बल्कि यह अंधकार में प्रकाश फैलाकर पथ प्रदर्शित करने वाला है। यह मशाल घाटी में नहीं, बल्कि अब पर्वत की चोटी पर से चारो दिशाओं को आलोकित करेगा (गीत सं0 2)। और इतना ही नहीं, मुण्डा साहित्य की काव्य धारा में यह एक अमूल्य निधि के रूप में शामिल हो गई है। आशा हैं इस कृति से काव्य प्रेमियों की आशा बढ़ेगी। मैं इस कृति की और श्री मुण्डा की सराहना करता हूँ और आर्शीवाद देता हूँ कि यह अपने भाषा साहित्य को समृद्ध बनाये।

राँची
अगस्त 6, 1978

डॉ0 प्रो0 ललिता प्रसाद विद्यार्थी
अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग
राँची विश्वविद्यालय राँची

बधाई संदेश

श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा आधुनिक मुण्डा साहित्य के एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार और जाने माने कवि हैं। इनकी एक रचना बिहार साहित्य परिषद् द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। ये मुण्डारी कविता की आधुनिक धारा के कवियों में से एक माने जाते हैं। बम्बरू उनकी मुण्डारी कविताओं का संकलन है, जिनका हिन्दी में अनुवाद कर, उन्होंने इसे ज्यादा लोकप्रिय बना दिया है। इस कविताओं में मुन्डा जाति को आशाएँ और आकांक्षाएँ मुखरित होती है। मैं जब बिरसा मुण्डा पर शोध कर रहा था, उस वक्त मैंने श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा की एक-दो कविताओं को अपनी किताब के लिए चुना था। मेरी बधाई और शुभकामनाएँ।

कुमार सुरेश सिंह

आयुक्त

दक्षिण छोटानागपुर प्रमण्डल

"बरबरू" धुनी हुई मुण्डारी कविताओं का संग्रह

"बरबरू" का स्वागत

प्रकृति की रंगस्थली में मुण्डा समाज का सदियों से निवास रहा है। वन-पहाड़, निर्झर की रंगीन रसमय एवं सुगन्धपूर्ण वातावरण में मुण्डा-जीवन व्यतीत होता रहा। हरियाली और फूलों के वन, रहस्यमय पहाड़ी-गुफा कन्दरा, कलकल-छलछल गाते निर्झर, प्राणों में उमंग-उन्माद भरनेवाली हवायें और वन-पक्षियों के कलरव ही मुण्डाओं की दुनिया रही है। शायद इसीलिए तो मुण्डा जाति सौन्दर्य और संगीत के उपासक प्रेमी हैं।

प्रकृति ने ही उन्हें एकान्त और सूनेपन के वातावरण में परिश्रम की सीख दी, इनके हृदय में स्वतंत्रता की भावना जगायी, गीत और नृत्य का अवलम्ब दिया। ये उसी अवलम्ब के आधार पर अपने एकान्त और सूनेपन को तोड़ते रहे। निर्झर नदियों की तरह इनके कण्ठ से गीत फूटे और पांवों में नृत्य थिरके। यही मुण्डारी गीत समय पाकर लोक साहित्य का रूप ग्रहण कर लेते हैं।.....

मुण्डारी लोक-गीतों की संख्या हजारों-लाखों में है। युग-युगान्तर से यह मौखिक परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती जा रही है। शायद ही ऐसा कोई मुण्डा या युवती हो, जिसे गीत की कड़ियाँ याद न हो। गीत रचने के लिए किसी पाठशाला की इनके यहाँ आवश्यकता नहीं। प्रकृति की रंगशाला में, अखड़ा के बीच ही गीत बनते हैं। यह सीखे गए गीत की कोई कड़ी भूल भी गए तो चिन्ता की बात नहीं, ऐसे भी प्रतिभासम्पन्न लोग हैं कि कड़ी जोड़ ही लेते हैं! यही कारण है कि कितने ही ताल सुर लय-राग में एक सरीखा रहने पर भी, उनकी कड़ियों में, स्थान विशेष में हम फर्क पाते हैं।

मुण्डाओं के गीत सैकड़ों वर्षों तक अप्रकाशित ही रहे। शायद फादर हॉफमैन ने पहली बार इनके गीतों का प्रथम संकलन तैयार किया था। फिर तो, कई मुण्डा-गीत संग्रह सामने आए। परन्तु, अभी भी हजारों गीत असंकलित ही हैं। इनके कितने ही गीत ऐसे हैं, जिन्हें साहित्य का दर्जा दिया जा सकता है। .....

ऐसा कहा जाता है कि जब मुण्डा चलता है, तो वह नृत्य होता है और जब बोलता है, तो वही गीत बन जाता है। प्रकृति ने बड़ी उदारता से यह वरदान मुण्डाओं

को दिया। काव्य-प्रतिभा-बीज मुण्डा-हृदय में प्रकृति द्वारा अखाड़े के वातावरण में बोया गया है, इसीलिए शायद हर मुण्डा कलाकार होता है, गायक और कवि होता है.....

हम लोक गीत-साहित्य से आगे बढ़ें और आधुनिक मुण्डारी साहित्य की समीक्षा करें तो हमें ज्ञात होता है कि एक-से बढ़कर एक आधुनिक कवि मुण्डारी साहित्य की श्रीवृद्धि में योग दान दे रहे हैं। मुण्डारी साहित्य को आगे बढ़ाने में कितने ही नाम आते हैं। उस अगली कतार में युवा-कवि दुलायचन्द्र मुण्डा प्रत्यक्ष खड़े दिखाई पड़ते हैं। आधुनिक मुण्डारी-साहित्य की समृद्धि के लिए ये प्रयोगोपयोगपूर्वक लगे हुए हैं। अपने गीतों के माध्यम से नवजागरण का शंख फूँक रहे हैं।

श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा का कवि-हृदय अपने समाज और राष्ट्र के प्रति आकुल व्याकुल दिखाई पड़ता है, जिसकी प्रतिच्छाया इनकी रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यदि समाज का हो या राष्ट्र पर कोई खतरा इन्हें दिखाई पड़ता हो, दुलायजी का कवि हृदय गर्जना हो उठता है। नेतृत्व के गीत फूट पड़ते हैं, दुश्मनों को ठंढा करने हेतु ये 'बाकर्ड' (भाला) लिए आगे बढ़ते हैं। ये कविता के माध्यम से मानव हृदय में जोश का संचार करते दिखते हैं, देश के लिए सब कुछ अर्पण करने की बात सुनाते हैं। प्रकृति से तादात्म्य रखने में ये आगे हैं ही। इनकी एक और खूबी है कि ये अपनी परम्परा को भी छोड़ना पसन्द नहीं करते, तो साथ ही समाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वास, पिछड़ापन और नशाखोरी से मुक्ति पाने के लिए प्रेरक गीतों का प्रेरक उपहार बाँटते फिरते हैं।

दुलायजी ने ऊँची शिक्षा प्राप्त की है। वृत्तशास्त्र में एम० एस० लिया है। सम्प्रति स्थानीय एक कालेज में प्राध्यापक भी हैं। परन्तु, कविता-कर्मता की प्रेरणा भी संभवतः इन्हें प्रकृति से ही प्राप्त है। इसी कारण से अपने बचपन से ही कविता लिखने में आगे रहे हैं। मुण्डाजी जब मधुर स्वर में अपनी कविता का पाठ करते हैं, तब भाषा न समझने पर भी, इनकी गेयता (राग की मधुरता) से श्रोता झूम उठते हैं।

मुण्डा गीति परम्परा से कुछ छिटक कर भी इन्होंने अपनी कविताओं में नए प्रयोग करने में अच्छी सफलता प्राप्त की है।.....

संक्षेप में कहा जाय, तो कहना पड़ेगा कि श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा आधुनिक मुण्डारी-साहित्य के आधार स्तम्भ हैं। मंजुल प्रसादगुण सम्पन्न इनकी भाषा होती है। सरस, पर सरल भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त हैं। "अम्बल" कविता-संग्रह में

76 गीतों का संकलन है। ''बम्बरू'' का हिन्दी रूपान्तर ''मशाल'' है। इस संग्रह को देखने से कवि के भाव-बोध का दर्शन हो जाता है और प्रतीति होती है कि इनकी कविताओं में कितना ओज-तेज है, कितनी करुणा है, कितना दर्द है, कितना स्वदेश-प्रेम की भावना, एकता और आत्मीयता की भावना छलकती है। इन्होंने खुद से अपनी कविताओं का हिन्दी रूपान्तर भी प्रस्तुत किया है। काफी परिश्रम करके ''बम्बरू'' की उपयोगिता इन्होंने बढ़ा दी है। हिन्दी रूपान्तर रहने से मुण्डा भाषा भाषी-इतर पाठक इसका रसास्वादन कर सकेंगे। ''बम्बरू'' कविता-संग्रह की अनेक कवितायें साप्ताहिक 'आदिवासी' में प्रकाशित की जा चुकी है। 'आदिवासी' के आलावा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी दुलायजी की रचनायें प्रकाशित होती रहती है। ''बम्बरू'' का स्वागत है। दूसरे भी इसका स्वागत करेंगे, ऐसा विश्वास है।.....

साथ ही इनकी अन्य कृति पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित देखने का मैं अभिलाषी हूँ।

सुशील कुमार
सम्पादक,
आदिवासी साप्ताहिक, राँची

शुभकामना

''बम्बरू'' के अधिकांश गीत मुण्डारी क्षेत्र के नृत्य-गीत अखाड़ों में गाए जाकर और कुछ आकाशवाणी से प्रसारित होकर प्रसिद्ध हो चुके हैं। उन्हें प्रकाशित रूप से देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। श्री दुलाय चन्द्र जी मुण्डारी के सुपरिचित कवि हैं, और व्यक्तिगत रूप से मैं उनके गीतों और उनके गाने के ढंग का बड़ा प्रशंसक हूँ। व्यक्तिवादी गीत लिखने में तो ये सिद्धहस्त हैं ही, समाजवादी गीतों को भी ये जिस वैयक्तिता के साथ प्रस्तुत करते हैं, वह बेजोड़ है। भारतीय आदिवासी जीवन के विस्तृत अध्ययन और विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में शोध सम्बन्धित प्रवास के अनुभवों से उनके गीतों में कई सांस्कृतिक परम्पराओं का समावेश हुआ है। इस अर्थ में मुण्डारी कविता को उन्होंने संभवत: सबसे अधिक समृद्ध किया है। दुलाय चन्द्र जी द्वारा मुण्डारी साहित्य को विस्तार देने और शेष भारतीय साहित्य के साथ इसका सामंजस्य स्थापित करने का यह काम सदा बढ़ता रहे यह हमारी मंगल कामना है।

डा0 प्रो0 राम दयाल मुण्डा
मिनिसोटा विश्वविद्यालय
यू0 एस0 ए0

पत्रकार की शुभकामना

मुझको श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा के कविता—संग्रह "बम्बरू" (मशाल) की पांडुलिपि देखने का सुयोग मिला। वैसे मैं बहुत अरसे से इनको और इनकी अभिरूचि को जानता हूँ— अपनी भाषा में गीत-कविता और लेख लिखते आ रहे हैं। इनकी मुण्डारी भाषा मैं नहीं जानता हूँ मगर इनकी रचनाओं के हिन्दी भाषान्तर को पढ़ने से स्पष्ट झलकती है कि इनकी कल्पना में जान है और सामाजिक जन-जीवन से ओत-प्रोत है।

यह खुशी की बात है कि इनकी इस पुस्तक में इन्होंने अपनी रचनाओं के हिन्दी अनुवाद भी साथ-साथ दिये हैं, जिन्हें अन्य भाषी लोगों को समझने परखने में सहुलियत होगी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इनके इस प्रयास से मुण्डारी भाषा साहित्य के विकास की लड़ी में एक कड़ी और जुड़ गई।

मैं आशा करता हूँ कि इनकी पुस्तक न केवल मुण्डाओं के बीच ही बल्कि समस्त साहित्य प्रेमियों के बीच में प्रशंसनीय साबित होगी। मैं इनके साहित्य सेवा की उत्तरोतर प्रगति की कामना करता हूँ।

राँची, 14 जुलाई, 1978।

भुवनेश्वर अनुज
प्रतिनिधि-नवभारत टाइम्स

बम्बरू एक प्रेरक कृति

जब हम किसी कवि या लेखक की रचनाओं की गहराईयों में उतर जाते हैं, तो पाते हैं उनके व्यक्तित्व और आन्तरिक प्रतिबिम्ब। श्री दुलाय चन्द्र जो अपनी कविता (गीत) संग्रह का नाम "बम्बरू" या मशाल रखा है। मशाल की जरूरत कब पड़ती है? अन्धकार, घोर अधियाले में! इस संग्रह के नामकरण के पीछे कवि का एक विचार है, उद्देश्य है। वह विचार और उद्देश्य है क्या?

आपने जनजाति तथा वनवासियों के सामाजिक जीवन के शोध कार्य में अपने जीवन के अमूल्य समय को दिया था। उसी समय भारत के आदिवासी, हरिजन तथा पिछड़े वर्ग कहे जाने वाले लोगों के वास्तविक जीवन को स्वयं नजदीक से देखने का मौका मिला था। उन लोगों के दैनिक जीवन को देख कर आपका कवि-हृदय द्रवित हो उठा। उनलोगों को आपने अज्ञान के अन्धकार में भटकते पाया, जीवन को चांदनी में "अमावस्या के घोर अंधियाले से घिरा हुआ"।

अपने धर्म और कर्त्तव्य निभाने को हृदय-प्रेरणा से आप ज्ञान रूपी बम्बरू या मशाल, देश के ग्रामीण क्षेत्रों में बसने वाले जन साधारण तक ले जाना चाहते हैं। आप चाहते हैं—युग-बोध तथा समय की पुकार जैसे सुक्ष्म वस्तुएँ भी कविताओं से स्थान देकर जनमानस के हृदयों में जन जागृति तथा जन चेतना को उत्पन्न करना। विषय लिये हैं विस्तृत। कविता या गीत संग्रह प्रकाशित करने का आप का उद्देश्य है नई पीढ़ी के लोगों को भावात्मक एकता में लाना। आप के प्रशिक्षण केन्द्र हैं—गावों के अखाड़े। आप, समाज में मीठी-क्रान्ति लाने के प्रयास में हैं, माध्यम चुन लिये हैं "गीत"

आप विद्या प्रेमी हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता। तत्काल आप, जगन्नाथ सरकार कालेज में मानव विज्ञान विभाग के व्याख्याता हैं। क्रोध जैसे अवगुण से दूर शान्त-स्वभाव! मृदुल भाषी! गीत, कविता तथा लेख-आलेख लिखकर साहित्य सेवा के अभ्यासी। आप के साधे हुए कंठ से जब गीत की स्वर-लहरी फूटती है तो सुनने वालों के मन को गुद-गुदाते हुए उनके हृदय-कुंज के आप कोकिल बन जाते हैं "प्रेम-रस" के गीत जब आप गाने लगते हैं तो युवक-युवतियाँ क्या, वृद्ध-वृद्धायें भी प्रेम में सराबोर हो जाते हैं। आपके इस सम्बन्ध का एक गीत है—"जुभा जिही ओटंएन् मेया गति ती-रे हड़गुरमे, अग: दुक-सुकु गोबेन उदुब तुकइ मे।" वाह!

आपकी कितनी भावुकता है इसमें! ऐसा ही आप ने जिस विषय बिन्दु को भी हाथ में लिया स्वर्णहार बना दिया। मुण्डारी भाषा के खाली खजाने को आप ने एक अमूल्य वस्तु प्रदान की है।

''बम्बरू'' में संकलित अधिक गीत या कविता राँची से निकलने वाली आदिवासी पत्रिका में समय-समय पर आप ने प्रकाशित करवाया था, और कुछ आकाशवाणी, राँची से प्रकाशित भी हो चुके हैं। आप अपनी रचनाओं के द्वारा एक पंथ दो काज चाहते हैं। एक शिक्षा और दूसरा आनान्द-उल्लास देना। आप का यह कार्य सराहनीय है। मैं चाहता हूँ कि आप का ''बम्बरू'' युग का संदेश वाहक बन कर ग्रामीण क्षेत्रों के अधिक में अधिक लोगों के हाथ में जायं, और ज्ञानालोक फैलाते हुए जन-जन के मन मन्दिर को आलोकित करे। आपका परिश्रम सफल हो। मेरी शुभ कामनाओं के साथ आपको धन्यवाद।

काशीनाथ सिंह ''काण्डे''
आकाशवाणी, राँची!

बम्बरू

बंगइ जन दुलाय बाबू मिअद नव दुरं हरिआए तइकेना। इनिआ: दुरं को रेओ नव दंगड़ा दंगड़ी को मिअद नव जोस मोंतोरे: ओङ ता: कोआ। इनिआ: दुरंपुति बम्बरु चिलका लुतुम एनकागे कजि कमिओ उदुबा कना। बम्बरु माने बम्बरु सेंगेल दो का मेनदो नेआ: मरसल ते नुबा: रेनको बुगिन होरा उदुब, तायोमा कनको अएअरते इदि गे इनिआ: मरं कमि दो। दुलाय बाबू रेंगे: ओड़ा: रे: हरा माता कन होड़ोए तइकेना। मेनदो इनिआ: उड़ु: विचार दो जलकर लेका इकिर गे तइकेना। इनिआ: दुरं कोरे नव जुगु रेन होड़ो को सेंड़ा ओम एतकन दस्तुर को बगे मेनेआ: कजिआ कना। एना मेनते दुरं हरिआ अञ स:ते पुरा: पुरा: जोआरे: नमेका।

प्यारी टुटी
जोजो टोली, खूँटी

बार टुंग जागार

बोंगा जान दुलाय चन्द्र मुण्डा: दुरंग किताब 'बम्बरू' रे जामा 76 दुरंग को संगोमा काना। नेया को हाटि कुटि चालावा कान राग रे ओला काना। नेया कोरा सोमाय दो 1978 ता: ते हान्ते गे। सोबेन दुरंग कोरा: मोरोम दो जी-कुड़ाम रे रोगो: लेका मेना:।

कवि, दुरंग हारिया कोदो जी-जी रेको र:-ईयामा होनांग। मेन्दो नेरे दुलाय दादा आया: सामाज-खूँट रेन सोबेन होड़ो को दुड़ुमा ते: र: बिरिद जा: को लेकाए लेलो: ताना।

ना: आबु ताला रे ने लेकान सेंणा-गियानी होड़ो को बंकु जाना। आबुआ: सामाज टुआर होन लेका टुंगुर-मुंगुर जाना। ने लेकान दुकु सोमाय रे मार बोदे निया: रना: रेबु एवोन-चेठाओ का।

मंगल सिंह मुण्डा
खूँटी

कवि की संक्षिप्त जीवनी

1 जन्म स्थल एवं काल --- राँची जिला के खूँटी प्रखंड के बारूडीह गाँव में ईश्वी सन् 1941-42 साल के लगभग में।

2 शैक्षणिक योग्यता --- परिवार में सर्व प्रथम शिक्षित व्यक्ति। राँची विश्वविद्यालय से मानव विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम0 ए0) 1966 में।

3 अन्य योग्यता --- आपने भारत जापान संयुक्त शोध परियोजना, जन-जाति नेतृत्व शोध परियोजना (योजना आयोग), अनुसूचित जाति शोध परियोजना (योजना आयोग) और खड़िया शोध परियोजना (आई0 सी0 एम0 एस0 आर0) में शोध अधिकारों के रूप में काम कर बिहार और मध्य प्रदेश के आदिवासियों और हरिजनों का अध्ययन किया है। इसके अलावा आपको अपनी मातृभाषा के साथ साथ ही, हो संताली, उरांव, नागपुरी जैसे आदिवासी और क्षेत्रीय भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान है। आप सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं, यथा सांस्कृतिक पर्षद, बिहार सरकार, नियमक पर्षद, जनजाति कल्याण शोध संस्थान बिहार सरकार, नियमक पर्षद खेती गृहस्थी और परिवार नियोजन, आकाशवाणी राँची स्वर परीक्षा समिति, आकाशवाणी राँची, कॉर्सेज आफ स्टडी, राँची विश्वविद्यालय सम्पादक मण्डल (मुण्डारी), राँची विश्वविद्यालय, उपाध्यक्ष, मुण्डा भाषा परिषद, राँची सचिव, होड़ो सेणा समइति, राँची के सदस्य के रूप में रहकर समाज सेवा के कार्य में भी संलग्न हैं।

4 अभिरुचि—	आप को नृत्य गायन में और गीत कविता तथा आलेख रचने में विशेष अभिरुचि है।
5 कृति—	प्रकाशित (1) सुड़ा संगेन (नव पल्लव) (2) बम्बरू (मशाल)। अप्रकाशित (1) हो लोक गीत संग्रह (2) संताली लोक गीत संग्रह (3) उरांव लोक गीत संग्रह (4) मुण्डओं के विवाह गीत और असंख्य मौलिक गीत आलेख। आदिवासी जनजीवन से सम्बन्धित रचनाएँ 'आदिवासी', छोटानागपुर संदेश, होड़ सम्बाद और हयुमन इभेन्ट जैसी पत्रिकाओं में छपती तथा आकाशवाणी, राँची से प्रसारित होती है।
6 वर्तमान व्यवसाय—	इस समय आप एच0 ई0 सी0 राँची–4 स्थित जगन्नाथनगर महाविद्यालय में मानव विज्ञान के विभागध्यक्ष और व्याख्याता के पद हैं।

सूची पत्र

	उद्गार के चन्द शब्द	
	दो शब्द	
	शुभ कामनाएँ	
1.	जोरो तम	1
2.	बम्बरू	2
3.	सेंगेल होन	3
4.	सेणा सर्शल	3
5.	गाँधी बाबा जोहार	4
6.	बिरसा भगवान	5
7.	बिरसा भगोअन	6
8.	डेमबरी बुरु रे	7
9.	नेलेका	8
10.	भारत एंग: दिसुम	9
11.	दिसुम तबु	11
12.	भारतवासी वीर	12
13.	एनेयोन दुरङ	14
14.	बिरबु सिंगरे	15
15.	बिर पुञ्जी	15
16.	जोनोम ओते	16
17.	जू बाबू	17
18.	एनेयोन दुरङ	17
19.	नवा युग	18
20.	चिलकञ रिड़िडीया	19
21.	तिरंगा ओडा:...	20
22.	सोयम अबुए	21

23.	हगा को	22
24.	तेयारेनबु बोदे	23
25.	नः दोले तेयरा कन	25
26.	सुकु असीली	26
27.	आदिवासी अम	27
28.	कबु बगेया	28
29.	चिलिकतेबु...	29
30.	सुकुम तैना	30
31.	सिंगर रुड़ायाबु	31
32.	हायरे तलङ	32
33.	होन किङ तलङ	33
34.	बरिया कारे अपिया	34
35.	टिकुरा रे	34
36.	बगे सोंगतिनङ	35
37.	सोना रेयः सुतम	36
38.	रुतु सड़ी तन	36
39.	जेता कोरे बनोः मडा	37
40.	होरा – होरा	37
41.	अम नगेर जीरे	38
42.	बलेः सिंगी लेका	38
43.	नेन्डय जुम्बलय रे	39
44.	बुदु बा...	39
45.	चिआ मेन्ते	40
46.	चियः	41
47.	चिनः अम	41
48.	अमगे अम	42
49.	कहोम रिड़िङोः	43
50.	कलङ रिपिड़िङ	43

51.	समा-समा चिलङ	44
52.	सनञ तन	45
53.	तेतङ	46
54.	बरे नतिन	46
55.	बा उरु	47
56.	कमी दुरङ	48
57.	चासा होड़ो अञ	49
58.	उनुबर होरा	50
59.	कम नमेया	51
60.	सनङा	52
61.	हेन्दे रिम्बिल	52
62.	चिमतङ सन्ते	54
63.	चेन: अञ मेतामा	55
64.	जिनिद् होरा	55
65.	अलङ	56
66.	सुगड़ा रे	57
67.	जी तञ	58
68.	अञ: नसिब ओनोल	59
69.	तिसिङ सकिङ	60
70.	जू तञ	61
71.	विदा दुरङ	62
72.	सेनोगबु मिसते	63
73.	लेल लेदमा	64
74.	जेता रे	65
75.	हगा को तञ	66
76.	सुकु होरा	67

1 जोरो तम गिरा दो

(राग-करम)

मूल	भाषान्तर
मेदद: तञ जोरो तम	आँसू मेरा गिरा दे
हे अञ: मेदा ते,	हे! मेरी आँखों से
बो: तञ: तिरुब तम	सिर मेरा झुका दे
हे अम: कटा रे।	हे! तेरे चरणों में।
ति: किञ में अयरते,	मुझको आगे लिए चल
तोल किञ में बयरते,	मुझको अपने मन को रस्सी से बाँध चल
कटा तञ दो तमे	पैर मेरा थाम दे
हे अम: मंडा रे	हे! तेरे पद चिन्ह पर।
अञ बारि चिलिका,	मुझ पर केवल नहीं
सोबेन कोरे से बिलिका,	सब पर समान दया दृष्टि हो
सुतु: लेम सिंग बोंगा	भगवन! ले ले अपनी शरण में
हे सोबेन जमा रे	हे! हम सब को साथ में।

बारूडीह-जून 61

2. बम्बरू: मशाल

मूल	भाषान्तर
नेः ने बम्बरू	लो इस मशाल को पकड़ो
इ द में	ले जा ओ
कोते!	किधर!
कोते	जिधर
सिंगी हसुरतना	सूर्य अस्त-होता है।
कोते	जिधर
चन्डु डुम्बईतना	चाँद डूबता है
कोते नुवः तना	जिधर अन्धकार फैलता है।
एन्ते कोते	उधर ही
मर्शल बड़य में	प्रकाश फैलाते रहो
नुबः रेन को	अन्धकार में जो हैं
अलोको तुंगुर-मुंगुरोः	वे निस्सहाय न हो जायें
कोतः रेलेया	कहां हैं हम
कोते लेया	किधर जायेंगे हम
नेया	ऐसा
अलोको मेनेचा	वे कहने न पाये
सेन तद् होरा को	चले हैं जिस पथ पर
अलो को सेन अदेचा	उसे वे भूल न जायें।

बारूडीह–सितम्बर, 69

3. सेंगेल होन: चिनगारी

मूल

ने: ने सेंगल होन
तोरोए रे तोपा कन:
रूल उड़ुङ् केयद्
ओटङौ वा कन रोड़ पतड़ा कोरे
सोए तम दुर्र केन
अतर हर्ला गिड़ियो: का
कारे दो
ओड़ो:गे ओटङौ:वा पतड़ा
एनाते
जरगी हिजुगा
हिजुगा होयो दुदुगर
सेंगेल होन तम एड़ेगो:
पतड़ा वो लिटियो: वा
आर
रचा तम लोसोदो: वा

भाषान्तर

लो इस छोटी सी चिनगारी को
जो कि राख में दबी पड़ी है
इसे निकाल कर
उड़ कर आये सूखे पत्तों में
सुलगा दो ज्वाला
जल कर भष्म हो जाय।
नहीं तो,
और उड़ जायेंगे सूखे पत्ते
उसके बाद
वर्षा आयेगी
तूफान आयगा
तुम्हारी छोटी सी चिनगारी
बुझ जायेगी
और
सूखे पत्ते भी गीले हो जायेंगे
सड़ जायेंगे
और
तुम्हारा आंगन कीचमय हो जायगा।

4. सेणा मर्शल ज्ञानदीप

मुण्डारी

अलो एणेगो: ने दिया
जुला कनो: का नेका
युग युग जकेद्
मरशल तसि इदियो: का
ने नुब: रे
ने बुरू विर दिसुम रे
गोटा नेका गे
चिय: नेका गे
चिय: चि
का लेल उरूमो: तन: को
ने दिसुम रे
लेल उरूमो: का

भाषान्तर

बुझने न पाये यह दीप
जलता रहे इसी भाँति
युग युग तक
प्रकाश फैलता जाय
इस अंधकार में
इन बन पर्वतांचल में
सब ओर ऐसा ही
ताकि
अनपहचाने भी
इस दुनिया में
आ जाय पहचान में।

5. गाँधी बाबा-जोहार! प्रणाम ओ युग के पिता

(राग-टेरो:)

मूल	भाषान्तर
जोहार जोहार गाँधी बाबा जोहार जोहार जुगुरेन आबा जोहार बरिञ जोहारम तन जोहार तेलय मे।	प्रणाम! ओ गाँधी बाबा प्रणाम!! प्रणाम! ओ युग के पिता प्रणाम!! केवल प्रणाम भर कर रहा हूँ प्रणाम मेरा अंगोकार कर लो।
अमदोम सेनो: जन लन्दा-लन्दा मयङ रे गमचा ति: रे तम डन्डा: जुगु रेन बाबा, जुगुर: मन्डम मन्डा तुकद ले।	हँसते-हँसते तुम तो चले गये कमर में लँगोटी और हाथ में डण्डा लिए, युग के पिता तुम हमलोगों के लिये युग की पद्-छाप छोड़ गये।
अम: मनारङ् का मुका दड़ियो: अम: बिचार का तुला दड़ियो: लड़ाई बेगर लड़ाई तेगे लड़ाइम दड़ि जन।	तुम्हारी महानता नहीं नापी जा सकती तुम्हारी विचार नहीं तौले जा सकते क्योंकि तुमने बिना लड़ाई लड़े ही लड़ाई जीत ली।
अमग: मयोम सिन्दुरी जन अमग: जङ् दो बा हिसिर जन मोलोङ् रे टीका कुड़मरे हिसिर कमे नतिन गे।	तुम्हारा खून सिन्दुर बन गया तुम्हारा हड्डी फूल-माला बन गयी सिन्दूर-स्वरूप भाल पर टीका और माला स्वरूप वक्ष पर तुमको सदा
दिसुम रे मन्डा तम मन्डा कन का सनरति ईमान तम गन्डा कन का तयोमेरेन हगा मिसी को अले उरूमें का।	धारण किये रहने के लिये ही। तुम्हारी पद् छाप धरा पर सदा बनी रहे तुम्हारी सच्चाई और ईमानदारी सदा बनी रहे, (ताकि बाद में हम भाई-बहन उनको सदा पहचानते रहें।

—बारूडीह सितम्बर 68

6. बिरसा भगवान

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
हीरानागपुर दो बिरसा भगवान दिसुम तलारेम तिंगु तुकद् हगा–मिसी कोव: केटे: तोनोल डोम्बरी बुरू रेमे ओले तुकद।	बिरसा भगवन्! हीरानागपुर को तुमने ही देश के बीच में खड़ा किया और भाई बहनों को मजबूत गाँठ को तुमने ही डोम्बरी पहाड़ पर लिख दिया।
बिरे बुरू कोरे अम: दुरङ् युग युग जकेद तम्बुरा कनो: गेया अमेम सेसा तुकद् सुड़ी होरा दिसुम होड़ो एसरेको सेने गेया।	वन पर्वतों में तुम्हारा गीत युगों तक गूँजता ही रहेगा जिस संकीर्ण रास्ते को तुमने प्रसस्त किया उसमें देश के लोग चलेंगे ही।
अमेम दीया तद् ने बुरू दिया होयो गमा रेयो जोलोब जोलोब बरू चेतन रे तम बुरू बम्बरू दुदुगर कोवांसी रेयो दोंगोंब दोंगोब।	तुमने जिस पहाड़ी दीप को जलाया वह हवा पानी में भी जलता रहेगा पहाड़ के ऊपर यह तुम्हारा पहाड़ी मशाल आँधी–तूफान में भी धधकता ही रहेगा।
तरा ति: रेम सब लेद रूतु बनम एट: ति: रेदो अ:शर कापी– मिदे अकड़ा सुसुन नङ् गेम सड़ी केना जोनोम दिसुम मुकती मेन्तेम सब लेद शार–कापी।	एक हाथ में तुमने बाँसुरी और बनम पकड़े दूसरे हाथ में तुमने तीर–धनुष और फरसा एक ही अखाड़े में नाचने के लिये ही बजाते रहे जन्म भूमि की मुक्ति के लिये ही पकड़े थे। तीर–फरसा।

—राँची— मई 63

7. बिरसा भगोअन बिरसा भगवान

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
हतु तुकारे मनोआ जतिरे	गाँव के घोंसले में, मानव जाति में
बिरसा भगवान एसेकर गे	बिरसा भगवान एक अकेले
तुरे लेनए नवोवा चन्डु लेका	नये चांद की तरह उगे
नवा दिया होए जुंडि केदा।	नयी ज्योति फैलाये
नवा दिया होए जुंडि केदा	उसने नयी ज्यति फैलाया
विरे बुरू कोरे: दिया केदा	जंगलो पहाड़ों को प्रकाशित किया
अदाकन को होरए उदुबद को	खोये हुओं को रास्ता दिखाया
तेनाकन कोए दो दो बिरिद् केद को	गिरे हुओं को ऊपर उठायी।
सरोवादारे सार जना	सरवादा में तीर चला
डोम्बरी बुरू रे गुली जना	दुम्बारी पहाड़ में गोली चली
मुण्डा जाति कए रिड़िङ् मेया	मुण्डा जाति तुम्हें नहीं भूलेगा
बिरसा कजी रनु आन गेया।	बिरसा तुम्हारी बात औषध सी बन गयी।

—बारुडीह जुलाई, 59।

8. डोम्बरी बुरू रे डोम्बरी पहाड़ पर

(मागे)

मूल	भाषान्तर
डोम्बरी बूरू चेतन रे ओकोय दुमङ् रूतना को सुसुनतना डोम्बरी बुरू लतर रे चिमय बिंगुल सड़ीतना को सँगिलाकदा।	डोम्बरी पहाड़ के ऊपर कौन मांदर बजा रहा है लोग नाच रहे हैं डोम्बरी पहाड़ के नीचे कौन बिगुल बजा रहा है लोग ऊपर? ताक रहे हैं।
डोम्बरी बुरू चेतन रे बिरसा दुमङ् रूतना को सुसुनतना	डोम्बारी पहाड़ के ऊपर बिरसा मांदर बजा रहे हैं लोग नाच रहे हैं।
डोम्बरी बुरू लतर रे सयोब बिंगुल सड़ी तनाको सँगिलाकदा।	डोम्बारी पहाड़ के नीचे साहब विंगुल बजा रहा है, लोग ऊपर ताक रहे हैं
जोनोम दिसुम नगेनगे बिरसा दुमङ् रूतना को सुसुनतना	जन्म देश के लिए ही बिरसा मांदर बजा रहा है, लोग नाच रहे हैं।
गोली चलव नगेनगे सयोब बिंगुल सड़ी तना को सँगिलाकदा।	गोली चलाने के लिए ही साहब विगुल बजा रहा है, लोग ऊपर ताक रहे हैं।
गोली बरूद चबा जना बिरसा दुमङ् रूतना को सुसुनतना	गोली बारूद खत्म हुए बिरसा मांदर बजा रहा है लोग नाच रहे हैं
डोम्बरी बुरू चेतन रे जोनोम दिसुम अबुव: को ककलातना	डोम्बारी पहाड़ के ऊपर लोग "जन्म-देश हमारा है" को गूंजित कर रहे हैं।

९. नेलेका ऐसा

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
ओटडे जना तिरंगा	लहरा उठा तिरंगा
रड़ा जनाए भारत एंगा,	मिली मुक्ति माँ भारत को,
नसीब दोजा धरातिरे	भाग्य मिले, तो जग में ऐसा ही मिले।
नेका गे नगो: चा।	
बिरास सिदो रितुई–गुन्डाई,	बिरसा, सिदो, रितुई–गुन्डाई
गांधी पटेल लछिमी बाई,	गाँधी, पटेल ओर लक्ष्मीबाई,
होड़ो दोजा धरातिरे	मनुष्य बने, तो जग में ऐसे ही बनें।
नेका गे बइन चा।	
ससङ् गुन्डा समड़ोम गुन्डा	चूर्ण हल्दी और हीरे का
कचम उरूम दड़िय: मुंडा	'मुण्डा' भेद नहीं तुम बता सकते,
मिदेन दोजा धरातिरे	एकता बने, तो जग में ऐसी ही बने।
नेकागे मिदेन चा।	

––थाना खेड़ा (म.प्र.) जनवरी 69

10. भारत एंग: दिसुम भारत भारत माँ का देश भारत

(राग--करम)

मूल	भाषान्तर
हिम बुरू चेतनाने	हिमालय पर्वत की चोटी पर से
लेलेमे ने दिसुम ओते	देखो इस धरती की मिट्टी को
गड़ा बुरु बिरते सिंगरा कन	किस प्रकार नदी, पहाड़ और जंगलों से सुशोभित है
जिलिङ् चकर,	सारी की सारी भूमि।
भारत एंगा: दिसुम भारत।	(ऐसा है) भारत माँ का देश-भारत।
हिम बुरू पुन्डि पगरी	हिमालय, जैसे स्वच्छ मुकुट है।
गंगा, जमुना पयला सड़ी	गंगा यमुना, जैसे निर्मल आँचल हैं।
हीरानागपुर सोना समड़ोम हिसिर	और हीरानागपुर, जैसे सोने और
विजिर-विजिर	हीरे का हार है
भारत एंग: दिसुम भारत।	कैसी चमक रही हैं भारत-भूमि चमचम-चमचम।
	(ऐसा है) भारत माँ का देश-भारत।
समुन्दर द: नील सड़ी	दक्षिण में समुद्र जैसी नीली साड़ी है।
दखिन रेय: भारत बकड़ी	साथ ही साथ भारत का घेरा है
असम चा बगन, काश्मीर परी गमय	असम, जैसे चाय बगान और
तिञ्जरं-तोञ्जोर	कश्मीर जैसे परीलोक।
भारत एंग: दिसुम भारत।	कैसी झलकला रही है यह भूमि भारत मां का देश-भारत!
गुवा, जमदा नोवा मुण्डी	गुआ, जमदा, नोवामुण्डी
उड़ीसा, सिंहभूम मेड़ेद मुन्डी	उड़ीसा और सिंहभूम लोह-क्षेत्र है
जबलपुर संगमर दिरी, गिरिडीह	(और) जबलपुर संगमर पत्थर और
अबरकदिरी	गिरीडीह अबरक पत्थर
विजिर-बिजिर	इस भूमि पर झक-मक कर रहे हैं।

भारत, एंग: दिसुम भारत।	ऐसा है भारत मां का देश-भारत!
रानीगंज, झरिया, बोकारो	रानीगंज, झरीया और बोकारो पर गर्व ह
चितरञ्जन रेलका उसारो:	जिनके चलते चितरंजन रेल, तेजी से चलेगी
नेत: र: कुइला सुकुल दुडू-दुडू निदा सिंगो	क्योंकि यहां के कोयले का धुआँ सर्वत्र छाया हुआ है
भारत एंग: दिसुम भारत।	ऐसा है भारत माँ का देश-भारत!
दमोदर द: डिगबोई सुगुम दीया,	दमोदर का पानी और डिगबोई के तेल का दीपक!
जुला कनोगा चुडूद नेया,	जलता ही रहेगा झिल मिल-झिल मिल।
भारत ओते रे ओटङा कनोगा तिंरगा फिर फिर	सदा भारत का तिरंगा फहराता रहेगा। सरसराता हुआ आकाश में।
भारत एंग: दिसुम भारत।	यह भारत माँ का देश है—भारत!

11. दिसुम तबु मुहिमा कन — देश हमारा संगट में है

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
बिरे बुरू गड़ाते सिंगरा कन	वन पर्वतों और नदियों से सुशोभित
नणी तसद् बा जो ते सजवा कन	लता–द्रुमों एवं फूलों–फलों से सज्जित
सुगड़ दिसुम रेबु जोनोमा कन	सुन्दर देश में हम जन्में हैं
न जोनोम ओते	इस जन्म भूमि को
दुलड़ा लो: ते	अति प्यार से
मरबु जोगव जोतोनन	(और) यत्न से हम पालेंगे
एला–एला एलाबु जमय पेड़े:	आओ, हम शक्ति संचय करेंगे
दिसुम तबु मुहिमा कन।	(क्योंकि) देश हमारा संकट में है।
दिसुम रे मप: तुपुञ बगेतम	मार–काट को दुर्नीति को त्याग दो
दिसुमाते चिलन चेन्टा बिदातम	भेद–भाव को देश में विदा कर दो
हगा वोया गाती कोम	भाई–बन्धुओं को गले मिलाते चलो
बुरू चोरद रेन	जो पहाड़ों की तराइयों में हैं
हुवङ् हंगी रेन	जो दुर्गम घाटियों में हैं
बगेय कन को पिचा इदी कोम	उन छूटे हुए को ढूँढ़ने चलो
एला एला एला बु जमय पेड़े:	आओ, हम शक्ति संचय करेंगे
दिसुम तबु मुहिमा कन।	(क्योंकि) देश हमारा संकट में है।
गंगा जमुना। गड़ा द: निरल	गंगा–जमुना का पवित्र पानी
कबु पोन्डे रिकई जेता हेरेल	किसी दुष्ट को गन्दा करने नहीं देंगे
नमिन बुगिन द: बिरल	इतना सुन्दर निर्मल जल
तेता कनो: का	सदा स्वच्छ रहे
जय जुग नेका	युगों तक ऐसा ही
मरबु बकड़िया दिसुम	चलो हम देश की रक्षा करेंगे
एला–एला–एला बु जमय पेड़े:	आओ, हम शक्ति संचय करेंगे
दिसुम तबु मुहिमा कन।	(क्योंकि) देश हमारा संकट में है।
पेरोंग चिर झण्डा तबु ओटडा कन	हमारा तिरंगा झण्डा फहरा रहा है

हुड़िङ् मरङ् सोबेन कोगे: गरका तन	छोटे-बड़े सभी को बुला रहा है
मनारड़े: उदुबे तन	देश को महानता सुना रहा है
होयो दुदुगर रे	आँधी तूफानों में
कोवाँसी गमा रे	आँधी पानी में
मर जोतो कोते बु टेकवे	हम सभी मिलकर इसे सम्भालेंगे्
एला-एला-एला बु जमय पेड़े:	आओ, हम शक्ति संचय करेंगे
दिसुम तबु मुहिमा कन।	(क्योंकि) देश हमारा संकट में है।

राँची -अगस्त, 66

12. भारतवासी वीर ऐ भारतवासी वीर

(राग-झूमर)

मूल	भाषान्तर
बले: मुलु: बा चन्डु: मुल: वा कन	बसन्त का नया चांद निकल आया है
बिरे बुरू बाते दलोब कन	वन पर्वत फूलों से अच्छादित है
मोगो-मोगो सोवन तन	(फूल) मह-मह सुन्दर गन्ध दे रहे हैं
कोतो-कोतो रे	हरेक डाल पर
धड़ा-धड़ा रे	प्रत्येक प्रशाखा पर
चेणे होन को चेरे-बेरे	चिड़ियां चहक रही हैं
भारतवासी वीर अयुम लेम	ऐ भारतवासी वीर
तम्बुरेमे सिबिल रुम्बुल।	(ऐसे समय में)
	तुम मधुर तान गुंजायमान कर दो।
(मेन्दो) सिरमा रे हेन्दे रिमिल रकब तन	लेकिन आकाश में काले बादल चढ़ रहे हैं
कने: हिचिरे बोरो गे सड़ी तन	बार-बार बिजली चमकती है, डर लगता है
होयो गमा हिजुगे तन	तूफान आ रहा है
मर चोतोरे कोम	लोगों को उठाओ

मर बिरिद कोम	उन्हें बचाओ
इसु होड़ो को दुड़ुगा कन	(क्योंकि) अभी, बहुत लोग सोये हुए हैं
भारतवासी वीर अयुम लेम	ऐ भारतवासी वीर?
तम्बुरेमे बिगुल रूम्बुल।	तुल बिगुल की आवाज तेज कर दो।
दिसुम रे लड़ाई सेंगेल सलगवे जन	देश में जंगाग्नि सुलग गई है
मयोम गड़ा छले-छले लिंगी तन	खून की नदी फूटकर उमड़ रही है
जोनोम ओते बुआले तन	जन्म भूमि बही जा रही है
दिसुम नगेन	देश के लिए
अलोम बगेन	पीछे मत पड़ो
मर होतोरेमे खन्डा	म्यान से तलवार खींचो
भारत वासी वीर अयुम लेम	ऐ भातवखासी वीर!
हिचि लेमे खन्डा बिजिर।	तलवार की चमक बिखेर दो।
धरती तम: असी तना अम: मयोम	तुम्हारी धरती तुम्हार खून मांगती है
उदुबे तै में दुलड़ दिसुम तम	बता दो-तुम्हारी प्यारी धरती को
चिमुनुङेम दुलड़ा जदम	कि उसे तुम कितना प्यार करते हो
रिचि लेका गे	बाल की तरह ही
सोरेन मेगे	झपट पड़ो
धरती इसु तेतङा कन	(क्योंकि) धरती अत्यन्त प्यासी है
भारतवासी वीर अयुम लेम	ऐ भारतवासी वीर!
मर सेंगेरे में तम सुपु।	अपनी भुजा तानो।

—राँची-अगस्त, 64

13. एनेयोन दुरङ् जागृति गीत

(राग–दुरङ्)

मूल	भाषान्तर
हीरानागपुर वासी को	हीरानागपुर के वासियों
बिर बुरू रेन वासी को	वन पर्वतों के निवासियों
धोरोम सिंगी तबु हनि: तुरा कन।	देखो, हम लोगों के लिए पवित्र सूर्य उदय हुआ है।
मरबु बिरिद हगा को	चलो हम जग जायं
मरबु चिनय मिसी को	चलो हम ठीक से पहचानें
ओको होरा को होरा बुगिना।	(की) कौन–सा रास्ता अच्छा है।
सिदा थुग दो सेनो: जन	पहले का युग तो चला गया
नवा युग सेठेर कन	यह नया युग आया है
युग लो: जुड़ी जुड़ी सेसेन बु इतुन।	हम के साथ कदम मिलाकर चलना सीखें।
दिसुम दिरि गे लेलो: तन	देश पथरीला नजर आता है
मेन्दो सोना गे तेना कन	(आओ) सब मिलकर कोड़कर निकालें।
सँगो–पती ते मरबु उर पटुबन।	खेतों को मजबूत बनोयेंगे
अड़ी कोबु तोल जोमेया	नदियों में बाँध बाँधेंगे
गड़ा कोबु तोल बन्दाया	(क्योंकि) नदियों के पानी में तेल बहता है।
गडा दगेरे तबु सुनुम लिंगितन।	तिरंगा लहरा रहा है
तिरंगा दो ओटङा कन	(पर) हम अबतक पीछे पड़े हुए हैं
अबु दो गोड़े बु तयोम कन	(चलो) हम भी तिरंगा के साथ ही उड़ चलें।
तिरंगा लो: गेबु ओटङ् जमन।	

—राँची–अगस्त, 64

14. बिरबु सिंगरे — वन को सजायेंगे

(राग--जदुर)

मूल	भाषान्तर
बादो तबु बा हिजु: तन	वसन्त का मौसम तो आ गया है
बिर दो तबु बिर उजड़ तन	लेकिन हम लोगों का वन उजड़ रहा है!
एला हो हगा मिसी को	हे भाइयों और बहनो!
सरजोम बा चबा तन।	सखुए का फूल खत्म हो रहा है।
युग--युग वाते---	युगों से---
बिर बोंगा होरो तन	वन देवता हमारी रक्षा करते आ रहे हैं।
बिर तबु चबा तन	(हाय) वन खत्म हो रहा है!
बिर बोंगा हणा तन।	(अब) वन देवता रुष्ट हो रहे हैं।
बिर गे तबु मुतुल कुन्टा	वन ही हमारा मूल स्तम्भ है
बिर दो कबु मगे मुन्डुया	वन हम बर्बाद नहीं करेंगे।
बिर बु सिंगरे, बिरबु सँवारे	(बल्कि) वन को सजायेंगे-सवारेंगे
दारु दोबु रोवा दुकुया।	हम वृक्ष अवश्य लगायेंगे।

15. बिर पुञ्जी — वन सम्पदा

(राग जदुर)

मूल	भाषान्तर
बुरु रे बुरु मदुकम,	पहाड़ पर पहाड़ी महुआ
रिबि-रिबि तन मदुकम,	रब रब खूब गिरता है।
बेड़ा रे बेड़ा सराजोम	तड़ाई में तराई का साखू
गसा-गसा तन सराजोम।	झर-झर कर गिरता है।
रिबि--रिबि तन मुदुकम,	रब रब कर गिरता है
दोगो दाई दोलङ् हलङउ	हे दीदी, चलो चुनने चलें।
गसा-गसा तन सराजोम	झर-झर कर गिरता है
दोगो दाई दोलङ् तुम्बलउ।	हे दीदी, चलो बटोरने चलें।
दोगो दाई दोलङ् हलङ्उ,	हे दीदी, चलो चुनने चलें
रिंगा रेबु तिकि जोमेया,	अकाल के समय पका कर खायेंगे,
दोगो दाई दोलङ् तुम्बलउ	हे दीदी चलो बटोरने चलें
अकल रेबु तंङे नबेया।	दुर्भिक्ष के समय पकाकर खायेंगे।

16. जोनोम ओते — जन्मभूमि

(राग–जुदर)

मूल	भाषान्तर
भारत दिसुम तबु जिलिङ् चकर,	हमारा भारत एक विस्तृत देश है
बुरु समुन्दरते हेंदेया कना	पहाड़ और समुद्र से घिरा हुआ है
दिसुम तला रेंदो बिरे बुर	देश के बीच में वन और पर्वत हैं
गड़ा हूड़िङ् गड़ङ् गेरे–आ कना।	छोटे बड़े नदी नाले भरे पड़े हैं।
युगु–युगु बाते भारत दिसुम,	युगों से हमारा भरात देश
दया धोरोम तेंदो उमिथा कना,	दया और धर्म के लिए प्रसिद्ध है।
जाति पाति इबु जिनिद होरा	यहां विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं।
हिले–मिले तेबू तैया कना।	सभी हिल–मिल कर रहा करते हैं।
भारत एंगा: सोबेन होने गणा,	हम भी भारत माँ के बच्चे हैं।
हगा मिसी कोगे सोबेन अबु,	हम सब भाई और बहन हैं
हगा–हगा रेंदो कपाजियो मेन:	भाई – भाई में कभी–कभी झगड़ा स्वभाविक है
जीदन सुनुम कबु हणन तबु।	पर जीवन भर एक दूसरे से रूष्ट नहीं होना चाहिए।
भारत दिसुम तबु जोनोम हसा,	भारत देश! हमारी जन्म भूमि है
जीदम जकेद नेरे तेनो: मेन:,	जीवन भर इसी में रहना है
जोनोम ओते जोगव जोतोन नगेन	जन्म भूमि की सेवा के लिए
सोबेन कोते ओते जनगियों मेन:।	सबको इस भूमि की रक्षा करनी है।

17. जू बाबू — जाओ बेटा

(राग—जदुर)

मूल	भाषान्तर
जू बाबू जू, जू सेनोः में।	जाओ बेटा—जाओ
ने पीरी तरौड़ी, ने सबे में।।	लो ढाल और तलवार लो।
हतु अतोम दिरिरे, ने लेसेरे में।	इसे गाँव के पत्थर पर तेज कर लो,
दिसुम तबु दिसुम, जू बञ्चवे में।।	देश हमारा बचाओ—जाओ।
चीनी मुदाई हनिः, हनिः लोड़ो तन।	दुष्ट चीन को देखो ताक में बैठा है,
हपे हपे हनिः, दिसुम बोलो तन।।	देखो (वह) चुपके से देश में आ रहा है।
मोलोङ रे ने सिन्दुरी, ने टीका तमे।	कपाल में सिन्दुर का टीका लगा देती हूँ
जी ओपे में बड़े, दिसुम सथारेये।।	जाओ, प्राण न्योछावर करो देश को (दुष्टों से) बचाओ।।

18. एनेयोन दुरङ — जागृति गीत

(राग—करम)

मूल	भाषान्तर
हीरानागपुर वासी को	ऐ हीरानागपुर के वासियों!
बिर बुरु रेन वासी कोरे	ऐ वन पर्वतों के निवासियों!
हनिः तुरा कना	देखो! हमलोगों के लिये
धोरोम सिंगी तबु तुराकन रे।	पवित्र सूर्य निकल आया है।
नुवः निदा परोम जना	अब अंधेरी रात बीत गई है
मर्शल गोटा तिसर जना	चारों ओर प्रकाश बिखर गया है
बिरे बुरु कोरे	वनों में, पर्वतों में—
सोबेन को सेकेड़ाबु विरिद् रे।	अब हमलोग जल्दी उठेंगे।
मरबु विरद् हगा को	भाइयों और बहनों! हम सब
मरबु चिनय मिसी को	उठेंगे और देखेंगे—परखेंगे
ओको होरा को	कौन से रास्ते—
ओको होरा होरा बुगिना रे।	कौन से रास्ते अच्छे हैं।
सिदा युग दो सेनोः जना	पुराना युग तो चला गया
नवा युगदङ सेटेर कना	यह नया युग आया है
युग लोः जुड़ी-जुड़ी	हमलोगों को जोड़ी-जोड़ी,

जुड़ी–जुड़ी सेसेन बुइ तुन रे	इसी नवयुग के साथ चलना है।
दिसुम दिरि गे लेलो: तना	हमारा देश तो पथरीला लगता है
मेन्दो सोना गे तेना कना	लेकिन, इसमें सोना दबा पड़ा है
संगी पाती ते मर	आओ, हम सब मिलकर
सांगी पाती ते मरबु उर पटुवन रे।	इसी पथरीली धरती को खोदेंगे।
अड़ी कोबु तोल जोमेया	खेत बनायेंगे हम लोग
गाड़ा कोबु तोल बन्दाया	बाँध बाधेंगे नदियों में
गड़ा दगे रे तबु	क्योंकि यहाँ की नदियों के
गड़ा दगे रे सुनुम लिंगी तन रे।	पानी में तेल बहता है।
तिरंगा दो ओटङा कना	तिरंगा तो लहरा रहा है
अबु दो गाड़े बु तयोम कना	लेकिन, हम अब तक पीछे हैं
तिरंगा लो: गे मर	आओ हम लोग भी—
तिरंगा लो: गेबु ओटेङे जमन रे।	तिरंगा के साथ उड़ चलेंगे।

19. नवा युग — नव युग

(राग करम)

मूल	हिन्दी भाषान्तर
ओ हीरानागपुर रे	अहा, हीरानागपुर में।
ओ निरल नागपुर रे	अहा, सुन्दर नागपुर में
बा चन्डु: हनि: मुलु: व कन।	बसन्त के चाँद का नवोदय हुआ है।
पांडु सकम उरुडु तन	पुराने पीले पत्ते झड़ रहे हैं
बले: सकम सुड़ा तन	सुकोमल पत्ते फुट रहे हैं
विड् लेका धरती उरिन तन।	(और) सांप की तरह धरती चोला बदल
हटि–कुटि बा को बा तन	रही है।
मोगो–मोगो सोवन तन	(यहाँ) विभिन्न प्रकार के फूल खिल रहे हैं
	सुन्दर सुगन्ध फैल रही है
सुगड़ सोवन दिसुम रे नबे तन।	(और) सुगन्ध देश में फैल रही है।
हटिया दुमङ् मङे मङ	हटिया मांदर मंङ्–मंङ् बज रहा है
टाटा करतल चङे चङ	टाटा झांझ चंङ्–चंङ् बज रहा है
दामोदर छैला दुरङ् सुसुन तन।	(और) दामोदर छैला नाच गा रहा है
अबु बिर बासी को नगेन	हम वन वासियों के लिये
रेंगे: रबड़: हो को नगेन	हम निस्सहाय जनों के लिये
नेया नवा युगु सेटेर कन	नये युग का अविर्भाव हुआ है
	हीरानागपुर में

राँची–फरवरी, 64।

20. चिलकञ रिड़िडीया: मैं इसे कैसे भूला दूँ

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
जेटे सिंगी कले कल	जेठ की चिलचिलाती धूप
हायरे भला बले बल	(और) हाय! ये स्वेद बूदें,
दारु उम्बुल जी राड़े: नि:	ऐसे समय में—
चिल कञ रिड़िडीया।	शीतलता प्रदान करने वाली वृक्ष की छाया
	मैं इसे कैसे भूला दूँ।
यूरोप र: दुदुगर रे	यूरोप की आँधी में
हीरानागपुर अनुतन रे	जब हीरानागपुर बह रहा था
हम्बुद केन बाबा बिरसा	(उस समय) अपने हृदय में इसे रखकर
चिलकञ रिड़िडीया।	बचाने वाले बिरसा को,
	मैं केसे भूला दूँ?
गुलाम बयर ते तबु	गुलामी की रस्सी में
तोले लेन भारत तबु	जब हमारी भारत माँ बंधी थीं
राड़ा केन बाबा बापू	(उस समय) उनको मुक्त करने वाले बापू को
चिलकञ रिड़िडीया।	मैं कैसे भूला दूँ?
रसिक चन्द्र कजी तना	(रसिक चन्द्र) कह रहा है
जी बड़े सेनो: का	जान भले ही चली जाय (पर)
तोबा लेकन जोनोम दिसुम	दूध--जैसी इस जन्म भूमि को
चिलकञ रिड़िडीया।	मैं केसे भूला दूँ!

21. तिरंगा ओड़ो अबुवः कर्मी

तिरंगा और हमारा कर्त्तव्य

मूल	भाषान्तर
तिरंगा झण्डा तबु ओटङा कना बन्डा लेले ओङा कद् लेका, नेयागे भारतवासी कोवः दिसुम युग-युग ओटङा कनोः काने लेका।	तिरंगा झण्डा लहरा रहा वैसा (ही) जैसा तीर धनुष लगता है (यही) हम भारतवासियों का राष्ट्रीय झण्डा हैं युगों तक उड़ता रहे इसी प्रकार।
अबु सोबेन भारतवासी को नेयागेबु सुसरे सोबेन कोते, तोबे तैना तबु दिसुम निरल युग-युगबु ओटङेया सोबेन कोते।	हम सभी भारतवासी— इसी झण्डे की उपासना करेंगे तभी देश हमारा सुन्दर रहेगा युगों तक हम इसे लहराते रहें।
जोतो भारतवासी को— से गेयाबु नियतङ् सोबेन, तिपिः चुपुल रपका बाबु— नेया बिरसा गाँधी जवाहर तको कजि केदा।	हम सभी भारतवासी— इस समय समान हैं, एक दूसरे को साथ लेकर चलेंगे यही बिरसा, गाँधी और जवाहर भी कहते हैं।
सोना रूपा कुइल मेड़ेद बाबा चाउली कोते परेःआ कना, अबुवः दिसुम इसु पुंजीयन मेन्दोबु रेगेः गोजेन तना।	सोना, चांदी, कोयला, लोहा धान और चावल से यह देश भरा हुआ है। हमारा देश धनवान देश है। लेकिन हम सब भूख से तड़प रहे हैं।
कमियाबु कुरु मुटु— दिसुम पुँजी तेबु पेरेःआ, तोबे सोबेन सुकु तेबु तइना तिरंगाबो ओटङा कनोः गेया।	हम लग्न (परिश्रम) के साथ काम करेंगे देश को धन दौलत से भरेंगे तभी हम सुख से रह सकेंगे और तिरंगा भी सदा लहराता रहेगा।

22. सोमय अबुए गरका तना

समय हम लोगों को पुकार रहा है

(राग–झुमर)

मूल	भाषान्तर
गड़ा हुअङ् कोरेन हगा को सोबेन	घाटियों में निवास करने वाले भाइयों!
कुआँ रेन चोके लेका कबु तैन	कुएँ के बेंग की तरह अब हम नहीं रहें
टुँडङ् रकबाबू बुरु चुटी	पर्वत की चोटी की ओर बढ़ेंगे।
बुरु चुटियाते दिसुम	पर्वत की चोटी से
होरा कोबु उरुम	देश के रास्तों को पहचानेंगे
ओको होरा को नपय	कौन सा रास्ता अच्छा है
बोदे सेकड़ानाबु मर जोतो जरह	चलो हम जल्दी तैयार हो जाएँ
सोमय अबुए गरका तना।	समय हम लोगों को पुकार रहा है।
देला सोबेन मिदे रेगेबु जमन	आओ, हम सब साथ मिलेंगे
देला सोबेन मिसा तेगेबु रकब	आओ, हम सब साथ चढ़ेंगे
ओतोङ् तोपोल सुपुतुगाबु देला	आओ, हम सब कतार बांधेंगे
हुड़: तोद जनरे	(रास्ते में) ठोकर लग जाने पर
पासे चाँदी जनरे	पैर फंस जाने पर
सँगी पाती तेबु देपेग:	सब मिल कर सहारा देंगे
बोदे सेकेड़ानाबु मर जोतो जहर	चलो, हम जल्दी तैयार हो जाएँ
सोमय अबुए गरका तना।	समय हम लोगों को पुकार रहा है।
दीयायाबु दीयाबु जन्डी नेका	—हम दीप को ऐसा जलायेंगे
जुग-जुग जकेद जुलो: लेका	(कि) युग-युग तक वह जलता रहे
अहो हगा मिसी को	ऐसा भाइयों और बहनों!
दिसुमें: अरेशल	देश को प्रकाशित करेगा
दीया मरेशल	यह दीप—
अदा कन को नमे होरा	(और) खोये हुओं को रास्ता मिलेगा।
बोदे सेकेड़ानाबु मर जोतो जहर	चलो, हम जल्दी तैयार हो जायेंगे
सोमय अबुए गरका तना।	समय हम लोगों को पुकार रहा है

23. हगा को भाइयो!

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
रिम्बिले चि सड़िया	बादल गरज रहे हैं
चि बन्दुकुगे सड़िया	या, बन्दूकों की दनदनाती आवाज है?
मोटा सुकुल चिलारि रकबतन	देखो, चारों ओर धुआँ के बादल उठ रहे हैं
हगा को, हगा को!	भाइयों! भाइयों!!
दिसुम दो कोवांसि गेया।	
लारि गे गमाया	दुनिया तो कुहासा पूर्ण लग रहा है!
चि ओकय मेद्द: जोरोया	बादल ही पानी बरसा रही है?
तरङ् बुरू रेदो लिंगी तन मयोम	या कि कोई आँसू बहा रहा है?
हगा को, हगा को	हिमालय पर्वत पर तो खून बह रहा है!
गंगा–जमुना किन किरूम गेया।	भाइयों! भाइयों!
ने सोमय दो नेका गेया	गंगा जमुना में खून की लालिमा घुल गई है।
चि होड़ो गेबु पापी गेया	यह समय तो ऐसा ही होगा
न डाते मनवारे नेका गे लड़ाई सेंगेल	कि मनुष्य ही पानी होगा
हगा को, हगा को	(क्योंकि) प्राचीन काल में ही लड़ाई की आग
गोटा दिसुम गोवाया नेया।	भभकती आ रही है।
	भाइयो! भाइयों!!
	इसका विश्व साक्षी है।
मनवारे हिसिंगा रेया:	मनुष्यों में ईर्ष्या के विष की जडें
विषि बुटा मेन: गेया	अब तक विराजमान ही है।
नेया बुटा दिसुमरे तणि तन	और यह जड़ दुनिया में फैलती ही जा रही है।
हगा को, हगा को	भाइयो! भाइयों!!
चिलकाते दिसुमबु तेताया।	हम लोग दुनिया को स्वच्छ कैसे बना सकते हैं?

राँची–अक्टूबर 63

24. तेयारेनबु बोदे जल्दी हम तैयार हो जायेंगे

(राग करम)

मूल	भाषान्तर
अयुमेपे हगा को मर	सुनो, ऐ भइयों!
बिगुल रुम्बुल तम्बुर	गूँजती बिगुल की आवाज को
गरका तनए सोबेन कोगे	बुला रही है सभी को
दिसुम होरो संगी मेन्ते	देश की रक्षा के लिए
तेयारेनबु बोदे	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे
जोनोम दिसुम तोवा ओते	जन्म भूमि.....दूध सी धरती
इसुगे सोंकोटो रे---	अत्यन्त संकट में है
तेयारेबु - बोदे।	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे
बुरू दनङाते चीन	पहाड़ की ओट से चीन
ओड़ोए लोड़ो-लोड़ो तन	और ही ताक लगाय बैठा है
तेगा उड़ुङीयबु दोते	लात मार-मार कर उसे
सिम्रन टुन्डु परोमते	सीमा के बाहर हम कर देंगे
तेयारेनबु बोदे	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे
लड़ाई सेंगल ने ओते रे	लड़ाई की आग इस धरती पर
कबु सलगव रिकइ गे	कदापि सुलगाने नहीं देंगे
तेयारेनबु बोदे।	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे।
ने हगा पाकिस्तान---	यह पाकिस्तान भाई!
चिनए मेनेन तन	अपने को सोचता क्या है
तिसिङ् अबुव: कुड़मरे	आज हमारी छाती पर
बोमे: जोका तनारे	उसने बम अड़ा दिया
तेयारेनबु बोदे	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे
ने पायी कापी तेगे	इस दुष्ट को इसी फरसे से

टुन्डु गिड़ियबु दोते	चलो खत्म हम कर देंगे
तेयारेनबु बोदे।	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे।
हिन्दु मुसलमान ईसाई	हिन्दु मुसलमान और ईसाई!
हरिजन आदिवासी को भाई	हरिजन और आदिवासी भाई!
जोनोम दिसुम सुसर मेन्ते	जन्म भूमि की सेवा के लिए
सोमय गरका तनारे	समय सब को पुकार रहा है
तेयारेनबु बोदे	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे
पेड़े:ते पुञ्जीते मोदते	बल से, धन से और एकता
दिसुमबु बकड़िया रे	देश को हम सुरक्षित रखेंगे
तेयारेनबु बोदे।	जल्दी हम तैयार हो जायेंगे।

—बारुडीह–अक्तूबर, 65

25. न: दोले तेयरा कन अब हम तैयार हैं

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
न: दोले तेयरा कन	अब हम तैयार हैं
सबा नाले हाके कोन्डे:	हाथ में टांगा और कुल्हाड़ी हैं।
म: अयाले झूँड़ जनुम	कंटीली झाड़ियों को काटेंगे
सफायलि हतु दिसुम तले।	गाँव और देश को साफ रखेंगे।
न: दोले तेयरा कन	अब हम तैयार हैं
सबानाले पाल नयल	हमारे पास हल पाल है
सीयाले बुरु बिर जोला	वन–पर्वत और घाटियों को जोतेंगे
पुञ्जीयाले हतु दिसुम तले।	गाँव और देश को धनी बनायेंगे
न: दोले तेयरा कन	अब हम तैयार हैं
सबानाले कन्ची कुदलम	कांची और कुदाल पकड़े हैं
उरेयाले दुविऐशा ले	कोड़ेंगे और भार ढोयेंगे
बैयाले संडका सुड़ी होरा तले।	संकीर्ण रास्तों को सड़क में बदलेंगे
न: दोले तेयरा कन	अब हम तैयार हैं
सबानाले कागोज– कोलोम	कागज और कलम पकड़े हैं
ओलेयाले पढ़वा ले	लिखेंगे और पढ़ेंगे
इतुनाले अकिल गेले बाले।	हम बाल बच्चे ज्ञान सीखेंगे।
न: दोले तेयारा कन	अब हम तैयार हैं
बैयानाले डुलकी दुमङ	ढोल और मांदर बनाये हैं
सुंसुनाले अकिल अकड़ा रे	ज्ञान के अखाड़े में नाचेगे
बैयाले निरल हतु दिसुम तले।	गाँव और देश को सुन्दर बनायेंगे
न: दोले तेयरा कन	अब हम तैयार हैं
सबानाले सार–कपी	हाथ में तीर और फरसा हैं
सेनोगाले सेन्दरा सीमान	सीमा में शिकार को जायेंगे
होरोयाले हतु दिसुम तले।	गाँव और देश की रक्षा करेंगे।
न: दोले तेयार कन	अब हम तैयार हैं
सबा नाले सेणा बाती	ज्ञान की ज्योति हम पकड़े हैं
दीयायाले ने पुरू दिसुम	इस पहाड़ी प्रदेश को आलोकित करेंगे
उबपराले अले जीबी जाती।	जीवन और समाज का उत्थान करेंगे।

—अनिगड़ा आश्रम–सितम्बर 66

26. सुकु असीली शास्वत सुख

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
रेंगे: तेतङ् दुकु जाला	भूख–प्यास और दु:ख तकलीफ
मेन: गेया जिदन ताला	जिन्दगी के मझधार में तो हैं ही
दुकु सुकु रे	दु:ख में सुख में
सुकु दुकु रे	सुख में दु:ख में
चँडङेमें दुकु रेगे सुकु साला।	(अत:) दु:ख में ही सुख को चुनो, कदम बढ़ाओ।
लेलेमे जेटे सिंगी जेटे	देखो जेठ काल की गर्मी
लो तना अयुर तना ओते	(जिसमें) जलती धधकती है धरती
चिमिन लोलो रे,	इतनी गर्मी में भी
चिमिन अयुर रे,	इतनी ज्वाला में भी
दारू को सिंगरेन तन बा ते जो ते	वृक्ष अपना शुंगार फूल और फलों से करते हैं।
सिउ: तन को सिंगी बड़ा	हलवाले दिन भर—
ओते रेगे उड़ा–पुड़ा	खेतों में ही व्यस्त रहेत हैं
बल–बल जोरो–जोरो,	पसीना गिरा–गिरा कर
मेदद: जोरो– जोरो,	आँसू गिरा–गिरा कर
दुकु बदला सुकु गेको दणा बड़ा	दु:ख के बदले में सुख की ही तलाश करते रहते हैं।
कुरुमुटु कमी तेगे	कठिन परिश्रम करने पर ही
सेणा पेड़े: अड़व तेगे	ज्ञान और बल लगाने पर ही
किरिबुरु नोवामुन्डी गुवा	किरीबुरु, नोवामुन्डी और गुवा,
बोकारो झरिया गिरडीह	बोकारो, झरिया और गिरिडीह
तिंगुत कना टाटा रौड़केला हटिया नेया तेगे।	एवं टाटा, रौड़केला और हटिया खड़े हैं।
मेद् बु ओटए दिसुम मुलि,	अपनी आँख देश की ओर हम खोलेंगे
मोने बु तिसरे सेणा मुलि	मन को विद्या की ओर मोड़ेंगे
तांड़ा ताड़ी गे	अति शीघ्र ही
जोका जुड़ी गे	मिल जुल कर ही
नमोगा 'मुण्डा' तोबे सुकु असीली।	मिलेगा 'मुण्डा' तभी शास्वत सुख।

—बारुडीह–अप्रील 69

27. आदिवासी अम! ओ आदिवासी

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
अदला बदली जुगु रे,	—इस प्रगतिशील युग में
आदिवासिम बदलिन रे,	आदिवासी! तुम भी प्रगतिशील अगर बनोगे
दिरि दिसुम टका टुणि	तो यह उबड़-खाबड़, पथरीली धरती
सोना रे तम बदलिना रे।	सोना से परिणत हो जायगी।
सोतो जुगु दो सेनो: जना,	—सत युग तो चला गया
जोतो ताला कुञ्जी जना,	(उस सत युग की सत्यता पर)
आदिवासी अमगे सर्ती	सब ओर ताला जड़ गया है
इमान तिल गेम सर्तिय जना।	लेकिन आदिवासी सचमुच तुमने
	ईमान बाँटने को ही श्रेयस्कर समझा है।
गड़ा हँगी रेगेमा हगञ	—नदी घाटियों में ही हो भाई
बुरु दनङ् रेगेमा हगञ	पहाड़ों की ओट में ही हो भाई
बुरु चुटिम रकब रेचा	पहाड़ की चोटी पर चढ़ोगे, तभी तो
दिसुम होरम लेलेया तञ।	देश के प्रशस्त पथों को देख सकोगे।
जुन्डी जोम में सेणा बाती	—ज्ञान की बात्ती सुलगाओ
सिंगर जोम में जिबी जाती	जीवन और समाज को सजाओ
बदली तन जुगु लो—	इस बदलते युग के साथ-साथ
चन्डडेमें तञ गाति-गाति।	कदम साथ बढ़ोते चलो।
'मुण्डा' आदिवासी लेलते,	—"मुण्डा" (कवि) आदिवासियों की
	स्थिति देख कर
निदा- सिंगी: उडु: तन्ते,	रात-दिन इसी सोच में डूबा हुआ है
उबर सिंगी चिउलए तुरो:	कि उन्नति का सूर्य कब उदय होगा
सेणा, पुञ्जी सिंगरा कन्ते।	ज्ञान और धन से सुशोभित होकर।

धार (म0 प्र0) -जनवरी, 69

28. कबु बगेया नहीं छोड़ेंगे

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
जोतो जहर धंगड़ा को	सब के सब जवानों
अयुमे पे हपानुम को	और युवतियों सुनो
कबु बगेया, कबु बगेया	नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़े
जौ रसिका अकड़ा, कबु बगेया।	सदा आनंद प्रदान कनरे वाला अखाड़ा नहीं छोड़ेंगे।
रेगे: नेतङ् नेका गेया	भूख प्यास तो ऐसी ही है
दुकु दसा नेका गेया	दु:ख विपद भी ऐसे ही है
कबु बगेया कबु बगेया	नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़ेंगे
जौ हिरिति पिरिति कबु बगेया।	सदा का मेल प्रेम नहीं छोड़ेंगे।
डुलकी दुमङ् बु जुगुतुइ	ढोलक और माँदर मरम्मत करेंगे
अकड़ा नवा बु बइ	अखाड़े में नवीनता लायेंगे
कबु बगेया कबु बगेया	नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़ेंगे
जी रसिका रसी दो, कबु बगेया।	सदा मन का आनन्दित करने वाला रस नहीं छोड़ेंगे।

29. चिलिकतेबु अपासुल — कैसे जीवन निर्वाह करेंगे

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
ने युगु रे अकाल	इस युग में अकाल!
किरिङ् बेसा झंझकाल	खरीद बिक्री में झंझट!
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
टका अटाना पुइला चौली जन भाई	डेढ़ रूपया पैइला चावल हो गया
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे।
किरिङ् बेसव का नमो:	खरीद बिक्री भी नहीं मिलती
कमी उदमी का नमो:	काम धन्धा भी नहीं मिलता
चिलिक्तेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
टका अटाना पुइला चौली जन भाई	डेढ़ रूपया पैइला चावल हो गया
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
चिमिनते संगिला हेन्दे रिम्बिल	काले बादल की आशा भी कब तक देखेंगे
जेता मुलि कए गुले गुल	कहीं भी वर्षा की कोई गुंजाइश नहीं है
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
ले लेपे भाई तेतङा कन ओते तबु	देखो, इस प्यासी धरती को
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
असम दिसुम उङूगो:	असम जाने का भी विचार आता है।
हतु दिसुम हङूगो:	अपना गाँव भी याद आता है
चिलिकतेबु अपासुल	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे?
अबु युग रे रेंगे: नेका झंझकाल	हमारे युग में इस प्रकार की अकाल!
चिलिकतेबु अपासुल।	कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे
मुण्डा तबु कजी तनए	हमारे मुण्डा (कवि) कह रहे हैं
अबु रेंगे मेन: उपय	हम में ही नानाविध उपाय हैं
चते कबु अपासुल	क्यों नहीं हम जीवन निर्वाह कर सकेंगे
ओले पड़व चासा कमी रेबु जुलुङ्	विद्याध्ययन और कृषि में मन लगायेंगे
चते कबु अपासुल।	क्यों नहीं हम जीवन निर्वाह कर सकेंगे।

अनिगड़ा आश्रम–सितम्बर, 66

30. सुकुम टैना — खुशी रहोगे

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
बइ जोम में ओते अड़ी	बनाओ अपने लिये खेत
ओड़: दुअर कुआँ डड़ी	घर–द्वार और कुआँ–चुआँ
बइ जोममे जीदन रे	बनाओ अपनी इस जिन्दगी में
सुकुम तैनागा।	तुम सुखी रहोगे।
सेणा सेंगेल उरुमे मे	ज्ञान की अग्नि पहचानो
सेणा वाती जुन्डीयेमे	ज्ञान का दीप जलाओ
सरसलेमे जिनिद तम्	ज्योतिर्मय करो अपने जीवन को
सुकुम तैनागा।	तुम सुखी रहोगे।
अलम हुमु रिकय जिनिद्	मलिन मत होने दो जीवन को
अलम मैला रिकय जिनिद	धूमिल मत होने दो जीवन को
परची मे चोलोन तम	स्वच्छ रखो अपनी चलन को
सुकुम तैनागा।	तुम सुखी रहोगे।
दिसुम तम: सुगड़ा रे	देश अगर तुम्हारा सुन्दर हो
हगा मिसी को दुलड़ा रे	भाई–बहन अगर तुम्हारे पिये हों
दिसुम तला रे मनवा जति रे	(तो) देश में मानव समाज में
सुकुम तैनागा।	तुम सुखी रहोगे।
नेअ नञ: कनाजि	ये मेरी उक्तियाँ हैं
नेया अम: तला कुंजी	ये ही तुम्हारे ताला–कुञ्जी हैं
बइ जोम में निनिद् रे	बनाओ अपनी इस जिन्दगी में
सुकुम तैनागा।	तुम सुखी रहोगे।

31. सिंगर रूड़ायाबु फिर से शृंगार करेंगे

(राग करम)

मूल	भाषान्तर
दनासी विरिया ते	दासता की बेड़ी से
दिसुम तबु राड़ा जना	हमारा देश मुक्त हुआ
मरबु संगोम रूड़ाना	आओ, हम फिर एक हो जायेंगे
हतु दिसुमबु सिंगार रूड़ाया	हम गाँव और देश का फिर से शृंगार करेंगे
मरबु संगोम रूड़ाना	आओ हम फिर एक हो जायेंगे
अरी चली रीति--नीति	हमारी संस्कृति हमारी रीति-नीति
इसु जना छान-छिति	सभी इधर-उधर बिखर गई हैं
मरबु संगोम रूड़ाया	आओ, हम फिर से सवाँरेंगे
हतु दिसुमबु सिगर रूड़ाया	हम गाँव और देश का फिर से शृंगार करेंगे
मरबु संगोम रूड़ाया।	आओ, हम फिर से सवाँरेंगे
तिसिंग गेबु कजी केटे:	आज हम प्रण करें
कुड़म सुपुबु केटे: एटे:	वक्ष और भुजा तानेंगे
मरबु चँडङ् ऐटे:या	आओ, कदम फिर बढ़ायेंगे
हतु दिसुमबु सिंगर रूड़ाया	हम गांव और देश का फिर से शृंगार करेंगे
मरबु चँडङ् एटे:या।	आओ, कदम फिर बढ़ायेंगे
कजिबु इतुना हड़म कोते	वृद्धजनों में हम सीख लेंगे
कमी धँगड़ा धागिड़ि कोते	हम युवक युवती काम में लग जायेंगे
मरबु ताड़ा ताड़ी ना	(देश के लिए)
हतु दिसुमबु सिंगर रूड़ाया	हम गाँव और देश का फिर से शृंगार करेंगे
मरबु ताड़ा ताड़ी ना।	आओ, हम शीघ्रता करेंगे।

अनिगड़ा--अक्टूबर, 66

32. हायरे तलङ् हाय।

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
जरगी द: दो तेब: जना	बरसात तो पहुँच गयी
लारि रिम्बिल ओटङ् तना	बादल भी घुमड़ने लगे
कमी तना को जोतो चासा होड़ो को	सभी कृषक काव्य कर रहे हैं।
हायरे तलङ् अरणा हका कना।	हाय! पर हमारा जुअट टंगा पड़ा है।
हेरे तना को गोड़ा गुड़लु	सभी गोड़ा और गोन्दली बुन रहे हैं।
तुसङ् तना को रुलु–रूलु	सभी निराई–गोड़ाई में ब्यस्त हैं।
सोबेन मुली जोतो चासा होड़ो को	सब तरफ कृषक लोग दिखलाई पड़ते हैं।
हायरे तलङ् अरणा हका कना।	हाय! हमारा जुअट टंगा पड़ा है।
ओते तलङ् मरचा तना	जमीन हमारी परती जा रही है।
हेरो: बिदो: तयोम तना	रोपना–बोना भी पीछे पड़ रहा है
. रेंगे: तेतङ् तलङ् नणे: तना	गरीबी हमारी नजदीक आ रहा है।
हायरे तलङ् अरणा हका कना।	हाय! हमारा जुअट टंगा पड़ा है।
जू बोदे जू सेकेड़ा	जाओ, जल्दी ही चले जाओ।
सेनो: में 'मुन्डा' रीणी दंड़ा	हे मुण्डा, ऋण ढूँढ़ने जाओ
जेता गुन्डी उरि: गेलङ् किरिङ् किङ्	किसी गाय की जड़ी ही खरीद लेंगे
हायरे तलङ् अरणा हका कना।	हाय! हमारा जुअट टंगा पड़ा है।

बारुडीह—अक्टूबर, 70

33. होन किङ तलङ् दो हमारे बच्चे

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
होन को कलङ् संगी जोमा	बच्चों को ज्यादा नहीं पैदा करेंगे
करे दुकु लङ् तंगी जोमा,	अन्यथा दुख की प्रतीक्षा करेंगे
आको मुसिङ् रेगे: तेतङ् तन रे	किसी दिन भूख प्यास लगते समय
जेता मुसिङ् रुआ हसु तन रे	किसी दिन रोग-ग्रस्त हो जाने पर
उडू: चेतन उडू: बोलो जोरे।	पश्चाताप पर पश्चाताप मन मे समायेंगे।
अमो: द:अउम दु:उ जना	तुमको भी राहत मिल गई पानी लाने में
अञो सिउ:ञ रबल जना,	मुझको भी हल्का लगा जोतने में
न: दोलङ् कजी केटे: केया	अब तो हम दोनों बात पक्की कर लेंगे
ओड़ तलङ् मर्शल जन गेया	घर तो हम दोनों का प्रकाश हो ही गया
निकिङ रेगे प्रेम लङ् तिल केया	इन्हीं दोनों में हम प्रेम बाँट देंगे।
होन किञ तलङ् सुगड़ा किङ	दोनों सुन्दर बच्चों को
माता किञा लङ् दुलड़ा किङ,	पालेंगे दोनों दुलारों को
सेणा सिंगर तलङ् सिंगर किङ	ज्ञान के हार से शृंगार करेंगे
पुञ्जी पेड़े: तेलङ् सजव किङ	धन और बल से सवाँरेंगे
तुगुर-मुंगुर कलङ् बगे किङ	असहाय उन्हें हम नहीं छोड़ेंगे।
मुण्डा तबु कजी तनए	मुन्डा (कवि कह रहे हैं
कगे देरङ् होसोड़ोवए	असत्य तो नहीं बोल रहे होंगे
सँगी होन को कलङ् असुल दड़ी	(क्योंकि) ज्यादा बच्चों को पाल नहीं सकेंगे
रूआ हसु रे कलङ् जोतोन दड़ी	रोग शोक सेवा नहीं कर सकेंगे
सेणा बुदियो कलङ् पुरा दड़ी।	विद्या बुद्धि भी नहीं प्रदान कर सकेंगे।

बारुडीह—नवम्बर, 69

34. बरिया करे अपिया — दो या तीन

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
एंगा अपुबु सगी तना	माँ–बाप बढ़ते जा रहे हैं
होन गणा को पोसातना	बाल–बच्चे बढ़ते जा रहे हैं
हगा मिसीबु सँगी इदीतन	हम भाई–बहन बढ़ते ही जा रहे हैं
ओड़: दुअर रे, ने अबु दिसुमरे	घर दरवाजे में, इस अपने देश में
रिंगा तबु पोसा इदी तन।	अकाल तो बढ़ती जा रही है।
हगा कोबु सँगी तना	हम भाई बढ़ते जा रहे हैं
ओते हटिङ् चबा तना	खेत बंट कर खत्म हो रहे हैं
अपासुलो: मुन्डी मुन्डूतन	जीवन निर्वाह के उपाय समाप्त हो रहे हैं
ओड़: दुअर रे, ने अबु दिसुम रे	घर दरवाजे में, इस अपने देश में
रिंगा तबु पोसा इदी तन।	अकाल तो बढ़ती जा रही है।
नेकन दुकु लेल लेलते	इस प्रकार के दु:खो को देख कर
मुन्डा तबु उड़ू तन्ते	मुन्डा (कवि) भी चिन्तित हैं।
बरिया होनगे समड़ोम	दो या तीन बच्चे ही हीरे हैं
ओड़: दुअर रे, ने अबु दिसुम रे	घर दरवाजे में इस अपने देश में
रेंगे रिंगा तोबे एनङ निरा	अकाल का तभी निराकरण होगा।

35. टिकुरा रे — टिकरी पर

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
पुटसु गुटु रे	पुटस के जंगल में
मेरोम कोञ गुपी केनरे	जब मैं बकरी चरा रही थी
दाईगो, दाई गो	(उस समय) दीदी गो री दीदी।
टिकुरा रे ओंकोय दुरङे।	टिकरी पर कौन गीत गाये?
तिंगुवा कनाए लेसे लेसे	सीधे खड़े हुए थे
लन्दा तनाए मेसे मेसे,	मुस्कुरा कर हँस रहे थे
दाई गो, दाई गो	दीदी गो, ऐ दीदी!
टिकुरा रे ओकोय दुरङे।	टिकरी पर कौन गीत गाये?
सबानए रूतु तीरे	हाथ में बाँसुरी पकड़े थे
उड़ू: तनए मेन्दो जीरे,	पर मन में चिन्तित दिखाई पड़ते थे
दाई गो, दाई गो	दीदी गो, ऐ दीदी!
टिकुरा रे ओकोय दुरङे।	टिकरी पर कौन गीत गाये?

—बारूजीह

36. बगे सोंगति नङ् बिछुड़े साथी के प्रति

(राग--करम)

मूल	भाषान्तर
जोनोम जनाबु सोंगति,	हे साथी, हमलोग जन्मे
ने हतु तका रे	इस गाँव रूपी घोसले में
इनुङ् जनाबु सोंगति	खेले भी हम साथ में
मिदे रे ने दुड़ा रे।	एक में, इस धूल पर।
हरा जनाबु मता जना,	हम बढ़ गये, पल गये
बा लेकाबु आला जना	फूल के समान खिल गये
पम्पलद् लेका सोंगति	तितली की भांति साथी!
चिमिन होबु जलातिङ जना।	(सोचो) कितना उड़ते फिरते रहें।
मेन्दो अमदोम जुदन जना,	लेकिन तुम तो जुदा हो गये
ची मेन्ते होम हण जना,	जाने क्यों तुम रूष्ट हो गये!
अपिर जनम सोंगति	उड़ गये तुम, हे साथी!
ओको कोतो रेहोम दुब जना।	किस डाल पर बैठ गये?
बगे सोंगति को नगेनं,	बिछुड़े साथियों के प्रति
सिदा जगर को नगेन,	उन बीती बातों के प्रति
मिद् टिपः दो मेद्दः	एक बून्द भी आंसू—
कचि रेहोम जोरोया।	क्या तुम नहीं गिराओगे?
कचि रेहोम चकातिङा,	क्या तुम्हें पश्चाताप नहीं है?
नमिन सुक सिदा रेयः,	इतने सुख जो पहले के हैं!
मिसा लेका दो सयते—	एक बार भी तिरछी नजर से
कचि रेहोम हेताया।	क्या घूर कर भी नहीं देखोगे?

—बारूडीह

37. सोना रेय: सुतम सोने का धागा

(राग–अड़न्दी)

मूल	भाषान्तर
सोंगे सोंगे तै तै ते,	संग में रहते रहते
जी तबु जोड़ा जन्ते,	हमलोगों का जी जुड़–सा गया
सोना रेय: सुतम ते तोले जन।	सोने के धागे से बँध गया।
पुतम लेकबु जुड़ी जन,	पांडुक की तरह हमारी जोड़ी हो गई
मैनो लेकाबु जगर जन,	मैने की तरह हम बातें किये
सोना रेय: सुतम ते तोले जन।	सोने के धागे से (जी) बँध गया।
मेन्दो सोंगे तैनो: दिन दो,	लेकिन साथ रहने का दिन तो
नेगे चबा जना दो,	अब खत्म–सा हो हो गया है
सोना रेय: सुतम दो सिदे तन।	सोने का धागा टूट रहा है।
जां कोरे जेता कोरेयो,	जहाँ भी, जिस किसी जगह भी
चोलङ् पँडिल जनरेयो,	तितर–बितर हो जाने पर भी
सोना रेय: सुतम अलोगे सिदो:।	सोने का यह धागा टूटने न पाये
सेनो: में तञ दुलड़ा रे,	जाओ, ओ मेरे प्यारे
मन्डय ते तञ सुगड़ा रे,	कदम बढ़ाओ, मेरे सुन्दर
सोना लेकन जगर जगर जम।	(साथ ही) सोने सी बात भी बोलते जाओ।

बारूडीह–जुलाई, 70

38. रूतु सड़ी तन बाँसुरी बज रही

(राग–अड़न्दी)

मूल	भाषान्तर
विर होरा–होरा ते	वन के रास्ते से
बुरु जोला–जोला ते,	पर्वत की घाटियों से
रूतु दोरे एते: सड़ी तन।	सुनो, बांसुरी बज रही है।
गजा बाजा सड़ी तना,	गाजे बाजे बज रहे हैं
पालकी दो सजवा कना,	पालकी भी सजी हुई है
रूतु दोरे एते: सड़ी तन।	(लेकिन) बाँसुरी तो बज रही है।
रूतु दोरे सड़ी तना,	बाँसुरी तो बज रही है
नेते मेद्द: पारिड़ि तना,	इधर आंसू भी छलक रहे हैं
सिदा रेन सोंगति बगे तना।	(क्योंकि पहले का प्रेमी छूट रहा है।
मोलोंग रेदो टीका सिन्दुरी	भाल पर तो सिन्दूर का टीका लग गया
डीहये नगे नवा नगरी,	नयी नगरी बसाने के लिये ही
रूतु रूम्बुल मेन्दो तम्बुर तना।	(लेकिन) बाँसुरी की आवाज गूँज ही रही है।

बारूडीह—जुलाई, 70

39. जेता कोरे बनो: मंडा कहीं भी पद्चिन्ह नहीं है।

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
ओ गतिञ रे ओको सोमय	ओ प्रिये, किस समय
ओको होरम सेनो: जन	किस रास्ते से हो कर चले गये
ने तेते: रे, ने गितिल रे	इस ज्योत्सना में, इस बालु शशि पर
जेता कोरे बनो: मन्डा।	कहीं भी पद्चिन्ह नहीं है!
सिंगी तुरो: रे सिंगी तुरजन,	पूर्व में सूर्योदय हुआ
गोटा दिसुम रंगा जन,	सारी दुनिया रंगीली हो गयी
ने सेत: रे ने शिशिर रे	इस प्रात में, इस ओस में
जेता कोरे बनो: मन्डा।	कहीं भी पद्चिन्ह नहीं है!
ने नीलिमा लतर रे	इस नील गगन के नीचे
ने धरती चेतन रे,	इस धरातल के ऊपर
ने नुम्बलरे, ने दुड़ा रे	इस छाँह में, इस धूल पर
जेता कोरे बनो: मन्डा।	कहीं भी पद्चिन्ह नहीं है!

—बारूडीह–अगस्त, 62

40. होरा–होरा रास्ते–रास्ते

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
मिसा गेलङ् लेपेन केन	एक ही बार एक दूसरे को देखे
मिसा गेलङ् कुपुलिकेन	एक ही बार वार्तालाप किये
चिमिनेम हेड़ा गिड़िन जन अमदो हीरा	कितनी तुम देर कर दी ओ हीरे!
अमगे चञ तंगी होरातन होरा–होरा।	तुम्ही को तो रास्ते–रास्ते देख रहा हूँ।
ने मिसा नपम ते	इस एक ही बार की मुलाकात से
ने मिसा लेपेल ते	इस एक ही बार की देखा देखी से
जी तञ का बरा बरी जन अमदो हीरा	मेरा जी संतुलित नहीं है, ओ हीरे!
अमगे चञतँगी होरा तन होरा–होरा।	तुम्ही को तो रास्ते–रास्ते देख रहा हूँ।
ने लन्दा जगर रे	इस हास उल्लास में
ने गोले दुरङ् रे	इस सिसकारी और गीत में
निदा सिंगी अमगेञ दुरङ् तन अमदो हीरा	रात–दिन तुम्ही को गा रहा हूँ ओ हीरे!
अमगे चञ तँगी हरो तन होरा–होरा।	तुम्हीं को तो रास्ते–रास्ते देख रहा हूँ।

अनिगड़ा आश्रम–सितम्बर 66

41. अम नगेन जीर तुम्हारी लिए जी में

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
सोंगति मोती रे	प्रेम की संगति में
अम: ति: किन गाती रे	तुम्हारी भुजाओं के घेरे में
जोरो जना रसी	चू पड़ा प्रेम–रस
अम नगेन जीरे।	तुम्हारे लिए जी में
चिमतङ् तेम बगे किङ अते	जब से तुम छोड़ गये
सेरे तना जी जी रे	गल रहा है जी जी मे ही
लिंगी तना मेदद:	बह रहा है आँसू– जल
अम नगेन जीरे	तुम्हारे ही लिए जी में।
बाड़ि गड़ लिंगी तन	उफनाई हुई नदी बह रही है
नेते मेदद: पारिडितन	इधर आँखों से आँसू छलक रहा है।
जोरो तना मेदद:	ढुलक रहा है आँसू– जल
अम नगेन जीरे।	तुम्हारे ही लिए जी में

बरूडी–जून, 62

42. बले: सिंगी लेका बाल हँस की तरह

(राग–जदुर)

मूल	भाषान्तर
बले: सिंगी लेकम तुरे जन	बाल हँस की तरह तुम उदित हुई
ओड़: दुअरे गो मरशल जन	घर दरवाजे को तुमने आलोकिक किया
आला कन बा लेकम आला जन	खिले हुए फूल की तरह तुम बिलगई
सुसुन करम कोरेम साला जन।	नृत्य–गान में तुम योग्य निकली।
मेन्दो डिन्डा तैनो: तम: चवा जन	लेकिन कुवाँरी रहने के दिन खत्म हुए
सुकु सोमय सोबेन सेनो: जन	कुवाँरी अवस्था के सभी सुख विदा हो गये
दूतम हरिया सुतम तँणि केद	दूतम दार ने सूता तान दिया
मोणे होड़ो तला रेगोम साला जन।	पाँच व्यक्तियों के बीच में तुम्हारा चुनाव हुआ।
पुर्णिमा चण्डु: लेकम लेले लेन	पूर्णिमा के चाँद की तरह तुम लगती थी
सन्दी निदा लेकम् मैला तन	अमावस्य की निशा सी मैली हो रही हो
उड़ु: रेयो उम्बुल मोयोद् गेया	पश्चाताप करने पर भी छाया एक ही है
जीदन् सुनुम एनरेम ताला जन।	जीवन भर तुम उसी (छाया) में घिर गई हो।

*दूतमदार—वैवाहिक संबंध जोड़ने में मदद करने वाला अगुआ

बारूडीह—मार्च, 62।

43. नेन्डय जुम्बलय रे निर्दिष्ट कुञ्ज में

(राग–करमा)

मूल	भाषान्तर
अमदो चिमे मेने केदा	तुमने क्या मनोवृत्ति बनायी है?
नेका नेकम हिड़िकिदिञ	ऐसा जो तुमने मुझको धोखा दिया?
चिमिने होञ तँगि केना	कितनी देर तक मैं प्रतीक्षा करती रही
एन नेन्डय जुम्बलय रे	उसी निर्दिष्ट कुञ्ज में
समा गे होञ लेलहोर: होरा गे।	व्यर्थ ही रास्ता निहारती रह गई।
मंदुकम चिम होरो रिका त:ञ	क्या महुआ रक्षा करने का भार दिया हैं मुझको?
चि साधु चिअञ सदिनि तन	या मैं साधु हूँ जो साधना कर रही हूँ?
चिमिने होञ तँगि केना—	कितनी देर तक मैं प्रतीक्षा करती रही
एन नेन्डय जुम्बलय रे	उसी निर्दिष्ट कुञ्ज में।
समा गे होञ लेलहोर: होरा गे।	व्यर्थ ही रास्ता निहारती रह गई।
जी मोनेम हिड़ि केदिञ	मेरे मन–प्राण को तुमने धोखा दिया
(मेन्दो) तँगी मेगेयञ दुन्दु जकेद	(लेकिन) मैं आखरी दम तक प्रतीक्षा करूँगी
ओको मुसिङ ओको सोजोकरे	जिस किसी दिन संयोगवश अगर
मिसम रूवड़ा रे—	कभी लौटोगे
जोरोयम मेदद: नेन्डय जुबलय रे।	(तो) आँसू गिराओगे निर्दिष्ट कुञ्ज में।

अनिगड़ा–अक्टूबर, 66।

44. बुदु बा बुदु फूल

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
अकड़ा रेञ तिंगु केन	अखाड़े के किनारे खड़ा था मैं
बुदु बारे जी सुकु जन	बुदु फूल पर मन लग गया
दे गुइराम बुदु बा दो	ओ गुइराम बुदु फूल को तो
ओमञ ते ओमञ पे	मुझको जरूर ही दे दो
हाय गुइराम बुदु बादो	हो गुइराम! बुदु फूल को तो
ओमञ ते ओमञ पे	मुझको जरूर ही दे दो।
सयोब लेकन होड़ो को अपे	साहब जैसे तुम लोग हैं
बिर बा रेचि जो सुकु जन	क्या इस जंगली फूल में मन लग गया?

ओ गुइराम बुदु बा दो	ओ गुइराम! बुदु फूल को तो
ओमो: गे सोरोमा दो	देने में शर्म लगता है
हाय गुइराम बुदु बा दो	हो गुइराम! बुदु फूल को तो
ओमो: गे सोरोमा दो	देने में लज्जा आती है।
बुदु बा चि सोवना	क्या बुदु फूल में सुगन्ध है?
बुदु बा चि रसियना	क्या बुदु फूल में रस है?
ओ गुइराम बुदु बा दो	ओ गुइराम! बुदु फूल को तो
ओमो: गे सोरोमा दो	देने में शर्म आती है
हाय गुइराम बुदु बा दो	ओ गुइराम! बुदु फूल को तो
ओमो: गे सोरोमा दो	देने में लज्जा आती।
बिर बा चा बकड़ि बा	जंगली फूल रहे चाहे बटिका का फूल
नीरे सुकु जन जेतन बा	मन में लग जाने वाला कोई भी फूल
ओ गुइराम अञनगेन दो	ओ गुइराम! मेरे लिए तो
सोबाना रसियाना दो	सुगन्धी है, रस से परिपूर्ण है
हाय गुइराम अञनगेन दो	हो गुइराम! मेरे लिए तो
सोबाना रसियाना दो।	सुगन्धी है, रस से परिपूर्ण है।

—अनिगड़ा आश्रम-अक्टूबर 66।

45. चिआ मेन्ते चिआ मेन्ते: क्यों?

(राग-करम)

मूल	**भाषान्तर**
ओ चिमिन सुकुबु तै केना	कितने सुख में हमलोग थे।
हिरिति पिरितिबु जगर केन	प्रेम और आनन्द की बातें करते थे
मेन्दो-मेन्दो इदो	लेकिन न जाने क्यों!
ओको जगर तेबु हणन जन रे।	किस बात से एक दूसरे से रूठ गये!
कहोञ कुमु लेदा नेका,	मैंने देखा या न ऐसा स्वप्न
मुसिङ दोबु बपागे का,	कि बिछुड़ जायँ एक दूसरे से एक दिन
मेन्दो-मेन्दो इदो	लेकिन न जाने क्यों!
ओको जगर तेबु हणन जन रे।	किस बात से एक दूसरे से रूठ गये!
अहो! एन जुदन हुलङ,	आह! उस जुदाई की बेला में,
कहोम उदुब तुकञ तलङ,	तुम मुझको कुछ बता तक नहीं गये!
उकु - उकु चिहो	छिप छिप!
चिआ मेन्तेम उकु बगे कि:ञ रे।	क्यों तुम छिपकर मुझको छोड़ गये?

46. चिय: क्यों?

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
एन दिला कजी दो	उस दिन की बात को तो
सिदे केदम गतिङ्	प्रिये! तुमने तोड़ ही दिया
ओ गतिङ् कम लेलइरिन जना	प्रिये तुम दर्शन भी नहीं दी बाद में
चिय: हो ने लेकम हड़ादेन जना!	क्यों तुम इस प्रकार कड़वी बन गयी?
अञ दोञ मेन लेदा	मैंने सोचा था
बा बुगिन मेनागा	फूल बहुत सुन्दर है
मोगो–मोगो देरङ् सोवाना	भीनी–भीनी मधुर गंध भी निकलेगी
चिय: हो नेलेकम हड़ादेन जना।	क्यों तुम इस प्रकार कड़वी बन गयी?
सिगी रटिम निदा केदा	दिन तक को रात बना दिया तुमने
उड़ु लेमे रे गतिङ्	ऐ प्रिये! जरा सोचो तो
ओ गतिङ् एनञ उड़ु: तना	प्रिये मैं तो यही सोचता रहता हूँ
चिय: हो नेलकम हड़ादेन जना	क्यों तुम इस प्रकार कड़वी बन गयी?

बारूडीह–सितम्बर, 58

47. चिन: अम: तुम क्या!

(राग–जदुर)

मूल	भाषान्तर
चुंड़ु: तेमा चिंगा इपिल तेमा	तुम चाँद हो या तारा हो
इपिल कोगे मेद् दोए लेका तना	(कि) तुम्हारी ही ओर मेरी नजरें गड़ी हैं
बको: तेमा चिगो अँकड़ि तेमा	तुम बंसी हो या अंकुश हो
जी आर कुड़मे तञ रचगा कना	(कि) मेरे मन–प्राण तुम्हारी ओर खिचे हैं।
सुगड़ बा तेमा चिगो बले सुड़ा तेमा	तुम सुन्दर फूल हो या नई कोंपल हो
हुरुम सुकु गे गोञ बइजना	(कि) मैं मधुमक्खी ही बन गया
लासा तेमा चिगो लुपुड़ि तेमा	तुम लासा हो या लुपड़ी हो
चेणे लेका अञ दोञ आटा जना।	(कि) मैं पंछी की तरह लटक गया।
बोंगा तेमा चिगो भोगो मान तेमा	तुम देवी हो या भगवती हो
निदा सिंगी अमगेञ धेअन तना	रात दिन मैं तुम्हारा ही ध्यान करता हूँ
कतु तेमा चिगो बंइटि तेमा	तुम क्या छुरी हो या बंइठी हो
कुड़म वितर इम तञ गेदे तना।	(कि) मेरा हृदय कटा जा रहा है।

48. अम गे अम

ओको स: तेम हिजु: लेना
बा सुगड़ सोवन लेका
हायरे
कुड़म बितर जी रेम बोलो जन रे!
जी बितर रेम तैन जना
बा सोवनेम ओमा दिङा
हायरे
तिसिङे दोम देया कुंडम किङा रे!
सोबेन जीयेञ अड़व लेदा
अम; कटा सुबा रे
हायरे
ने मेदा ते कोतेम सेनो: जन रे!
हिजु: लेनम गुचङ् लेका
नुब: ओड़: बितर रे
हायरे
सेनो: तनम सिंगी हसुर लेका गे!
हिजु: लेनम एसेकर गे
इदि केदम गोटा दिसुम
हायरे
अञ: दिसुम दिसुम: उजड़ तन रे!
जरगी द: गमा लेका
मेद्द:ञ जोरो केदारे
हायरे
पेरे: गड़ा लेका मेद्द:ञ लिंगी केदा रे!
अञ: जी तञ अम: रेया
गोटा दिसुमेम डुबा केदा
हायरे
अञ नगेन अमगे भोगोमान रे!
लन्दा तन बा कोरे
तेते: निदा, सोबेन दिपिला रे
हायरे
अञ: नगेन अमगे अम गेया रे!

तुम ही तुम हो

(राग–करम)

भाषान्तर	मूल
किधर से तुम आ?	
सुन्दर फुल की गंध की तरह	
हाय:!	
छाती के भीतर हृदय में घुस गये।	
मेरे हृदय में तुम रहे	
फूलों की गंध तुमने प्रदान किया	
हाय!	
लेकिन आज उपेक्षित हूँ।	
सब कुछ मैंने निछावर किया था	
तुम्हारे ही चरणों में	
हाय!	
इन आँखों से दूर कहाँ चले गये।	
आये तो थे चिनगारी की भाँति	
इस अँधेरे घर के भीतर	
हाय!	
जा रहे हो, जैसा कि सूर्य अस्त हो रहा है।	
आये थे तुम अकेले ही	
पर सारी दुनिया को लेते गये	
हाय!	
मेरी दुनिया उजड़ रही है।	
बरसात की वर्षा जैसी	
मैंने आँसू गिराये	
हाय!	
भरी नदी की तरह मैंने आँसू बहाये।	
मेरा जी तुम्हारे में है	
सारी दुनिया को तुमने डुबा दिया	
हाय!	
मेरे लिये तुम हो भगवान हो।	
हँसते फूलों में	
चाँदनी में, सब समय	
हाय!	
मेरे लिये तुम ही तुम हो।	

खूँटी, सितम्बर 1958

49. कहोम रिड़िङोः : भुला नहीं सकता

(राग–भागे)

मूल	भाषान्तर
अमः जुंगुद जोवा रेगे	तुम्हारे गोरे गाल में
अमः तरल डटा रेगे,	तुम्हारे उजले दातों में
दिसुम रटिञ रिड़िङ्	मैंने दुनिया को भुला दिया
केदा, कहोम रिड़िङोः।	तुमको मैं भुला नहीं सकता
सुपिद रेम गलङ् किःञा,	जुड़े में तुमने मुझको बाँध लिया
पयला रेम तोपा किःञा,	आंचल में तुमने मुझको छिपा लिया
लेटेम लुटुइ जगर कोरे	मीठी–मीठी बातों में—
कहोम रिड़िङोः।	तुमको मैं भुला नहीं सकता।
नेलेका अलङ् पिरिति जन,	इस प्रकार हम दोनों की प्रीति हो गई
नलेका अलङ हिरितिजन	इस प्रकार हम दोनों की संगति हो गई
जीरेम बोलो जना सोंगति	प्रिये! तुम मेरी अंतरात्मा में समा गई हो
कहोम रिड़िङोः।	तुम को मैं भुला नहीं सकता।

राँची, जुलाई 65

50. कलङ् रिपिड़िङिः नहीं भूले

(राग–भागे)

मूल	भाषान्तर
नेलेका जीवोन जीवोन तेमा	इस प्रकार जीवन वाली हो
नेलका कुड़म कुड़म तेमा	इस प्रकार हृदय वाली हो
ओको मुसिङ् जेता मुसिङ्	जिस किसी दिन तुमको
कहोञ रिड़िङ् मा।	मैं कभी नहीं भूलाऊँगा।
तिसिङ् नेकन सोमय दोरे,	आज का इस प्रकार का समय
तिसिङ् नेकन जगर दोरे,	आज का इस प्रकार की बात
तरल दटा सिबिल जगर	तुम्हारे उजले दांत, तुम्हारी मधुर वाणी
कहोञ रिड़िङे।	मैं कभी नहीं भूलाऊँगा।
अमो नेका कजी तुकम,	तुम भी इस प्रकार कहती जाओ
अमो नेका जगर तुकम,	तुम भी इस प्रकार बोलती जाओ
मिदे जीवोन तेलङा जुड़ी	प्रिये! हम दोनों का जीवन एक–सा है
कलङ् रिपिड़िङ्।	(अतः) एक दूसरे को कदापि नहीं भूलें।

राँची— जुलाई, 65

51. समा-समा चिलङ् जमा-जमाना : क्या व्यर्थ मिला करते रहेंगे

(रांग-करम)

मूल	भाषान्तर
कुमु तेचि सुति ते	स्वप्न में या चेतना में कहो
जी लिपिर-लिपिर कते	जी मेरा सदा धड़कता रहता है
जुड़ी-जुड़ी सेन-सेन होरा रे	जोड़ी-जोड़ी चलते इस रास्ते में
समा-समा चिलङ् जमा-जमाना।	क्या हम व्यर्थ ही मिला करते?
सेन तेब: जना चि	क्या सचमुच में पहुँच गया
होरा हपटिङ् गे चि	रास्तों की जुदाई का स्थान?
सरी कजी सरी जगर तुका मे	तो सच-सच अपनी बात कहती जाओ
समा-समा चिलङ् जमा-जमाना।	क्या हम व्यर्थ ही मिला करते?
अम सेने ओको मुली	तुम जाओगी किस दिशा को
अञ सेने ओको मुली	मैं जाऊँगा किस दिशा को
तारे-नारे तना जीतञ हायरे	हाय! मेरा जी असमंजस में पड़ गया
समा-समा चिलङ् जमा-जमाना।	क्या हम व्यर्थ ही मिला करते?
अम सेने ओको मुली	चलोगी तुम जिस दिशा को भी
बैयो: होरा उली-फुली	बने रास्ते तुम्हारे सदा सुन्दर
विधि ओनोल कए मेटवे 'मुण्डा' तम	विधाता की लकीर को मुण्डा नहीं मिटायेगा
समा-समा चिलङ् जमा-जमाना।	(लेकिन) क्या हम व्यर्थ ही मिला करते?

बारूडीह—अप्रील 69

52. सनञ तन इच्छा होती है

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
एला गतिङ् होपोरेन में	आओ प्रिये, नजदीक आओ!
एला संगञ समाङेन में	आओ प्रिये, सामने हो जाओ!
तिसिङ् समङ् सपामङ्	आज आमने सामने होकर
जगर सनञ तन।	वार्तालाप करने की इच्छा होती है।
अम: जुँगुद जोवा लेलते	तुम्हारे गोरे गाल को देख कर
अम: तरल डटा लेलते	तुम्हारे उजले दांतों को देख कर
जुंगुद जोवा तरल डटा	गोले गाल और उजले दांतों को
चो: ओय सनञ तन।	चूमने की इच्छा होती है।
अलङ् गपातिकया कन्ते	एक दूसरे के गले में बाँह लगाये
कुड़म किङ् लङ् मिद कयते	छाती से छाती मिलाये
तिसिङ् प्रेम रसी नुनु	आज प्रेम रस पीने की
अञ दो सनञ तन।	मुझ को इच्छा होती है।
सरी कजि अलइ गतिङ	प्रिये! सच्ची बात बताता हूँ
अमरेञ बुला कना गतिङ	तुममें मैं मदमत्त हूँ
अम लो: प्रेम रसी नूनू	तुम्हारे साथ प्रेम रस पीने की
अञ दो सनञ तन।	मुझको इच्छा होती है।
अलम मेने कञ: कञ:	कहो नहीं तुम नहीं–नहीं
अलम मेने ओचो कञ:	कहो नहीं तुम लगूंगी नहीं
जी मोनते तिलनमे प्रेम रसी	(बल्कि) मन–प्राण से अर्पित करो प्रेम–रस
एना सनञ तन।	यह मैं चाहता हूँ।
प्रेम रेगे तोला कन्तें	प्रेम में ही हम दोनों बंध कर
प्रेम रेगे लङ बुला कन्ते	प्रेम में ही हम दोनों मदमत्त होकर
प्रेम दोरेयारे डोंगा	प्रेम सागर में नाव को
ओयरे सनञ तन।	खेने की इच्छा होती है।

चाईबासा—फरवरी, 68

53. तेतङ् प्यास

(राग–मागे)

मूल	भाषान्तर
जगर तेदो अलम हिड़िञ	बातों से भुलाओ न मुझको
दुरङ् तेदो अलम बुलेञ	गीतों से लुभाओ न मुझको
जीदनरेय: सुकु कोवा	जीवन सुख है जो—
एना ओमञमे।	उसे दो मुझ को।
अलम अयरिङ् होरा होरा	लिये मत चलो रास्ते रास्ते
अलम सुत:ञ कोचा कोचा	लिए मत फिरोगली–कूची में
जीदन रेय: होरा कोते–	जीवन का रास्ता है जिधर
एन्ते इदिञ में।	उधर ही लिये चलो।
अलम इतुञ नाथा–हाना	सिखवाओ मत यह वह
अलम बुदिञ समा–समा	व्यर्थ का ज्ञान मत दो
जीदन रेय इनितु कोवा	जीवन की सीख है जो
एना इतुञ मे।	उसे ही सिखाओ।
मण्डी मेन: रेगे: रेदो	भोजन है भूख लगने पर
द: मेन: तेलङ् रेदो	पानी है प्यास लगने पर
जीदन रेय: तेतङ् प्रेम	जीवन की प्यास तो प्रेम है
प्रेम गे एमञमे।	(अत:) प्रेम ही दो मुझको।

चाईबासा–फरवरी, 68

54. बरे नतिन भाई के प्रति

(राग–जदुर)

मूल	भाषान्तर
दिसुम दो हेलो तन बरे	देश तो दहल रहा है भाई
दुती गेम लरे लरे बरे,	तुम तो धोती ही लहरा रहे हो
गमयादो कोवाँसी तन	इलाका तो धुन्ध से छा रहा है
सिंगर गे सम्पोड़ेन बरे।	तुम तो सजने संवरने में लगे हो।
सिंगर सम्पोड़ेन दो बरे	हे भाई! शृंगारना संबारना,
बगे तम ओचो: गिड़ि तम,	(अब) तुम छोड़ दो, त्यागा दो,
जोनोम दिसुम बरे	जन्म देश (भूमि), दो भाई,
अलङेगे: रगे तन।	हम्हीं दोनों को बुला रहा है।
दिसुम लेलेमे जा बरे,	देश को देखो भाई
सोबेन को बिरिद जन,	सभी लोग उठ गए हैं जाग गए हैं
अलङो लङ बिरिद बरे	हम दोनों भी उठेंगे भाई
जोनोम दिसुम लङ रकब रुड़य।	(और) अपने जन्म देश को फिर उठावेंगे।

—खूँटी–सितम्बर, 1958

55. बा बरु : भ्रमर

मूल	भाषान्तर
एहो बा बरु! इतु तुकञ में तलङ	एहो सिखा दो ना ओ भ्रमर
अम लेकागे एन हेड़ेम दुरङ	तुम सा ही वह माधुरी राग,
बा तन बा को पिति बेड़ा	खिलते कुसुम को सहलाने
इतु तञ में बा लुपु: चेपे: तुसङ।	सिखा दो ना चूसना पराग।
बुलवा कनेम तेन जनौ सेत:	तुम तो तल्लीन रहते नित भोर
बा तन मोय को चो:ओ रेगे,	खिलती कलियों को चूम-चूम
रसी कोर: मोरीमेम सल बेड़:	रस ले ले करते रसास्वादन
अम रुकु-सुकु जनौगे।	तुम तो जी नित ही झूम-झूम।
इतुवनम चि जान मोन्तोर-जोन्तोर?	जानते भी हो क्या मंत्र-तंत्र?
दो इतु तञ मे तोबे, गोसोटोङ कुंबुडू!	तो सिखा दो ना वातुल चोर!
इदु कोत: कोरेम सिड़िबे—	जाने तुम्हें लगता कब है
चि कोत: कोरे बातन ओको बा,	कहाँ कहाँ खिलते कौन कुसुम,
अकल बकल तन कम लेलो: मुसिङो	कभी-व्यर्थ घबराते नहीं हो
बोरसान गेम अपिर बेड़: नेका।	आशा लिये सदा उड़ते तुम।
एना मेन्ते दङ इदिञ में मिसा-मिसा	इसीलिये ले चलो कभी-कभी
कारे उदुबञमे तलङ जनौ सेत:।	या दिखा दोना तब नित भोर।
जनुम ते जनुमो: रेयो, बा-लुपु:	काँटो में विध कर भी, पराग
नम ले एनङेम पतिय:,	पाकर ही सुख भोगा करते,
हपे हपे अम जाँ जेता निय:	मौन-मौन अनजानों के
जी अँवगेम तुड़ू वेड़य।	चित को तुम ही बींधा करते।
नेकन चुली बुली कोत: कोरेम	इतनी कला बाजी कहाँ से
इतुल: उदुबञ में तलङ मोन कुंबड़ू नि:	सीखी, बता दो ना चितचोर
जाँ हुड़िङ लेकवो उदुबञ मे	जरा-जरा भी बतला दो ना
जी नेय नगेन अकल-बकल तन।	मेरा मन तित ही विकल घोर।

राँची, मार्च 61

56. कमी दुरङ : कर्म गीत

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
ओकोस:आते होयो लेदा	किधर से हवा चली
हेन्दे रिम्बिल ओटङ लेना,	काले बादल घुमड़ने लगे हैं
दादा भाई दोलङ	हे भाई चलो
अरणा लङ जुगुतुइया	जुवाट ठीक करेंगे।
जरगी द: तेब: जन	वरसा ऋतु पहुँच ही गया
बुइबुन्दी को रकब जन,	वीर बहुटियाँ निकल आई हैं
दादा भाई दोलङ	हे भाई चलो
नयालेलङ जुगुतुइया।	हल ठीक करेंगे।
सीया लङ गोड़ा पिड़ि	खेत टांड़ जोतेंगे
हेरेयालङ गुड़लु इड़ी,	गोंदली और इड़ी बोयेंग
दादा भाई दोलङ	हे भाई चलो
हिता कोलङ जुगुतुइया।	वीहन की व्यवस्था करेंगे

बारूडीह, जुलाई 1965।

57. चासा होड़ो अञ

मैं हूँ किसान

मूल

बोतो:ए बेड़न सिउ: चलु: नि: तनि:
चासा तनञ, बाबा कोञ उपजा तन,
मेन्दो मिद् बिता ला:ई का बीतन
जिनिद् बारि नेया गेञ उड़ू:तन।
नयल कुदलम लोयोङ ते इदि केते
सेत: रेञ सेनो: अयुबेञ रूवड़:,
जेटे कल कलरे सावन जरगीरे
बल बलेञ जोरोय, मेद्द:अञ जोरोय।
नेकन सोमयो हिजु: बेड़:—
चि जेतन: का नमो: जोमेय:,
इमिन रेयो कुदलम इदि केते लोयोङरे
सिंगि बुड़ञ चलु:अ, जी बारि र:अय।
हेनेर सोमय ज:ने: तेब: तनरे
हिता नगेनेञ निर बेड़य,
हतुञ हिजु:अ दुवरेञ होनोर
का नम जन रे जी अलय-बलय।
असिन रिम्बिल ज: ओटङ बेड़:वोरे
हेन्दे हरियर ज: एकेल:वो लोयोङ रे,
इमतङ अञ: जी बा हुड़िङ आला: आ
दुरङे मिसा लेका दुब को:ते अड़ी रे।
अगन हिजु: तन बाबा जरोम तन
नुब: निदारे लोयोङ रेञ गिति:अ,
रबङ दो रबङ किचिरि तेञ रिंगातन
सड़े जङ होड़मो सेंरेद कोतेञ दपल बेड़य।
नवा साल हिजु:तना, नेते सेनो: तन
दसा मेन्दो तञ: नेका गेया अञ:,
दिसुम नगेन गेञ रिका जदा
दिसुम मेन्दो लन्दावे: लन्दाञ।

भाषान्तर

मैं हूँ किसान लंगोटी वाला
खेती करता मैं अन्न उपजाता,
पर वित्ता भर पेट नहीं भरा पाता
जब तक जीता यही पछताता।
लेकर हल कुदाल नित खेतों में
प्रात: में जाता, शाम ढले आता,
कड़ी धूप में मैं सावन घन में
पसीना बहाता आहें भरता।
ऐसा अवसर भी कभी तो आता
जब खाने को भी मिल नहीं पाता,
तब भी लेकर कुदाल खेत में
दिन भर चलाता, मन भर रोता।
बोने का समय जब आता
बीज के लिए दौड़-धूप करता,
गाँव में आता, द्वार पर रोता
जब नहीं मिलता, मन मचलता।
आश्विन घन नभ में जब घहराता
हरितिमा खेत में जब लहराता
तब मेरा मन-पुष्प कुछ खिल जाता
आड़ पर बैठ कर कुछ गा लेता।
अगहन जब आता अन्न-धन पकता
तब निशा में खेतों में सें सोता,
इधर जाड़ा वस्त्रहीन बेचारा
कंकाल तन को चिथड़ों में छिपाता।
नव वर्ष इधर आता चला जाता
पर दशा मेरी रूकी ही रहती,
दुनिया के लिए ही तो मैं करता
पर दुनिया मुझ पर हँसा भी करती।

राँची जुलाई 1961

58. उनुबर होरा : उन्नति का रास्ता

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
सेणा संगोम अकन को	ऐ सुशिक्षित लोगों!
अपे गे दिया मरशल को,	तुम्ही लोग दीप के प्रकाश हो
अपे तेगे दिसुम मरशलो:वा	तुम जैसे लोगों से ही देश उजाला होगा
अरशलाबु पे तबु	प्रकाश दिखाओ
दिसुम नुब: गेया।	देश हमारा अन्धकार है।
अयर तयोम लेले पे	आगे पीछे देखो
हगा मिसी को चिना कोपे,	भाई बहनों को पहचानो
बिर बुरू कोरे होरा को अदाकद	वे वन–पर्वत में भटक गए हैं
अरशलाबु पे तबु—	प्रकाश दिखाओ
दिसुम नुब: गेया।	देश हमारा अन्धकार है।
सेणा वाती जुंडियान रे	ज्ञान का दीप जलाये रखने से,
दिसुम तबु मरशलन रे,	देश को प्रकाशित रखने से,
अपासुलो: होराबु साला जोमा	हम अपने आप जीविका के रास्ते
अरशलाबु पे तबु—	चुन पायेंगे।
दिसुम नुब: गेया।	प्रकाश दिखाओ
	देश हमारा अन्धकार है।
अयर तयोम उडु: तन्ते	आगे–पीछे सोचते हुए
तुनुम नम केद:ए मुण्डा सन्ते,	मुण्डा को भी इस (प्रकाश) की महत्ता मालूम हुई
उबरो: कबु नेया:ए असी तन	(इसलिए) हमारी उन्नति हो, इसकी
अरशलाबु पे तबु—	मांग कर रहा है।
	प्रकाश दिखाओ
दिसुम नुब: गेया।	देश हमारा अन्धकार है।

—बारूडी, अगस्त 15, 1968

59. कम नमेया : नहीं पाओगे

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
द: लेका लिंगी तना	पानी की तरह बह रहा है
सोमय तम: लिंगी तना	तुम्हारा समय बह रहा है
कम नमेया	नहीं पाओगे
ओड़ो: कम नमेया	फिर नहीं पाओगे
बा लेकन सुगड़ सोमय	फूल सरीखे सुन्दर समय
कम नमेया।	नहीं पाओगे।
ईल को तम उरूडु जना	पर तम्हारे झड़ गए
अपोरोब तम डुन्डा जना	पंख तुम्हारे टूट गए
कम नमेया	नहीं पाओगे
ओड़ो: कम नमेया	फिर नहीं पाओगे
पम्पालद लेका जलातिङ	तितली की तरह उड़ना फिरना
कम नमेया।	नहीं पाओगे।
रसियन: जोतो बा	सभी रसदार फूल
गोसो जना गासर जना	मुरझा गए, झड़ गए
कम नमेया	नहीं पाओगे
ओड़ो: कम नमेया	फिर नहीं पाओगे
हुरूम सुकु लेका रसी चेपे:	मधुमक्खी की तरह रस चूसना
कम नमेया।	नहीं पाओगे।
रसिका चन्द्र कजि तना	रसिक चन्द्र कह रहा है
अलोम हियातिङ चकातिङ	चिन्ता पश्चाताप मत करो
कम नमेया	नहीं पाओगे
ओड़ो: कम नमेया	फिर नहीं पाओगे
विधि नेक:ए ओला कदा	विधाता ही ऐसा लिख दिया
कम नमेया।	नहीं पाओगे।

60. सनङा इच्छा होती है

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
गोल गुले जोवा,	सुडौल गोल गाल
चिलका जरोम लोवा	जैसे पके गूलर के फल
जो रेदो जोमे गे सनङा मोचा।	फल होता तो खाने की इच्छा होती है।
खनेञ हेतयी सयतेञ लेली,	बार–बार घूरता हूँ, तिरछी नजरों से देखता ह्
सुगड़ाः तए चुली–बुली,	उसकी चाल–चलन भी सुन्दर है
जगर रेदो जगर गे सनङा मोचा।	बात करेगी तो बात करने की इच्छा होती है
मोचा मगए मुगुई निरल,	ओठों पर सुन्दर मुस्कान है
डाटा अटल तरल–तरल,	दांत भी अटल (फूल) की तरह उजले हैं
ओमे रेदो चोःओए गे सनङा मोचा।	देगी तो ओंठ चूमने की इच्छा होती है।
अञ दन्दा गिड़ी जना,	मैं तो किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया
मेद् किङ अएरे बुलाकना,	मेरी आँखे उस पर मदमस्त हैं
मुन्डाः गेचा उली दःते पेरेः आकना मोचा।	मुन्डा का मुँह तो लार से भर गया है।

—बारूडीह जुलाई, 1972

61. हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कने काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा है

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
बुरु कोते दनङा कन	पर्वतों की ओट में छिपा हुआ
सिंगि तुर जना सेतः जना,	सूर्य उदित हुआ, सुबह हो गया,
नेया दिसुम गोटा मरेशल जना	यह देश प्रकाशमय हो गया
मेन्दो लेलोः तना, लेलोः तना	लेकिन दीख रहा है, दीख रहा हैं
हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कने!	काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा हैं
हेन्दे लारि रकब तना	काले बादल ऊपर चढ़ रहा है
बोंगा लेका लेलोः तना,	भूत की तरह दिखाई पड़ रहा है

गुड़ू-गुड़ू बोरोगे सड़ी तना एनरे, लेलो: तना, लेलो: तना हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कने!	गुड़-गुड़ भयानक आवाज हो रही है उसमें दीख रहा हैं, दीख रहा है काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा है।
इसु होड़ो को एयोना कन मरेशल रेको होनोर तना, नुब: रेन को तुंगुर-मुंगुर कन ओह! लेलो: तना, लेलो: तना हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कने!	बहुत से लोग जाग गए हैं (और प्रकाश में घूम फिर रहे हैं अन्धकार में जो हैं वे बेसहारा की तरह भटक से गये हैं ओह! दीख रहा है, दीख रहा है काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा है।
"मुन्डा" गे च:ए तयोमा कन तयोम ते च:ए एयोना कन, नेते हेन्ते: हेता बेड़ा तन ओह! लेलो: तना, लेलो: तना हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कने!	"मुन्डा" (कवि) ही तो पीछे पड़ा है (चूँकि) बाद में जागा है इधर उधर ताक फिर रहा है ओह! दीख रहा है, दीख रहा है काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा है!
बुरू दोन्दो केते सारी सुरु बुआ:ए गिरिधारी, बिपरिदाबु मिसातेबु सेनो: औरी हने: लेलो: तना, लेलो: तना हेन्दे रिम्बिल हिचिरे कन!	सचमुच ही पर्वत उठा कर गिरिधारी रक्षा करेंगे ठहरो, एक दूसरे को उठाते हुए साथ हम लोग चलेंगे वह दीख रहा है, दीख रहा है काले बादल बिजली की चमक बिखेर रहा है!

—राँची 10 अगस्त, 1962।

62. चिमतङ सन्ते — जब तक

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
चिमतङ सन्ते दिसुम तलङ	जब तक हम दोनों की दुनिया
तैकेना नवा	नयी थी
तैकेना बाते दलोब कन	(तो) फूलों में लदी हुई थी
हो गतिङ! हुरुम सुकु	हे प्रिये! मधुमक्खियाँ
कोगे सुकु–सुकुम अपिर केन।	स्वछन्द उड़ा करती थी।
सिंगि तुर लेन लन्दा–लन्दा	(तब) सूर्य उदित होता था हँसते हुए
चंडु:ओ मोचो–मोचो	(और) चाँद भी मुस्कुराता हुआ
निदा सिंगी लङ लन्दा केन जगर केन	रात दिन हमदोनों हँसते बतियाते थे
हो गतिङ! चिमिन सुकु	हे प्रिये! कितना सुख!!
सुकु रसि गेलङ चेपे: केन।	सुख का रस ही पिया करते थे।
पन्ती रेलङ चंडङ केन	पंक्ति में हम दोनों चला करते थे
बा लङ हलङ केन	(और) फूल चुना करते थे
जती–मती बा लङ गलङ केन	नाना प्रकार के फूल गूँथा करते थे
हो गतिङ! गलङ गलङ	हे प्रिये! गूँथते–गूँथते
तलङ जी किडो लङ गलङ केन।	हम दोनों एक दूसरे के मन–प्राण को भी गूँथा करते थे।
तिसिङ अलङ दिसुम तलङ	आज हम दोनों की दुनिया
पुरना चबा जन	बिल्कुल पुरानी पड़ गयी है
तैकेना उपुन मा नङ गे	थी सिर्फ चार दिनों के लिए
हो गतिङ! उजड़ा जन	हे प्रिये! उजड़ गई
कानि 'मुन्डा' तलङ टुन्डु जन।	(साथ ही) कहानी भी 'मुन्डा' खत्म: हो गई।

—बारूजडीह, 26 सित्मबर, 1970

63. चेन: अञ मेतामा : क्या कहूँ तुमको

मूल	भाषान्तर
तिंगु हपा कनम	खड़े हो चुपचाप
डसव तन	धँसते हुए
डसना चेतन रे	इन धसान के ऊपर
मुर्तु लेका गे	मूर्ति वत।
लतरो गड़ा बाड़ि तना	नीचे नदी उमड़ रही है
चेतनो लारि लेदा लदी	आसमान में बादल घिर जाए हैं
डसव गोजो: अञ	धँस कर मर जाऊँगा
मेनेय:	इसकी
बोरो चि बनो:!	क्या तुमको डर नहीं!
चिरियो चि बनो:!	क्या तुमको भय नहीं!
डोन्डो चि सेणञ मेतामा	तुमको मैं मूर्ख या अकलमंद कहूँ
जगरो दो कम जगरे	बोलते भी तो नहीं हो
गुंगा चि बइरञ मेतामा!	तुमको मैं गुँगा या बहरा कहूँ!

—बारूडीह, 18 सितम्बर, 1969।

64. जिनिद् होरा : जीवन पथ

मूल	भाषान्तर
ने: ने पुरना तरउड़ी	लो इस पुरानी तलवार को
ने पुरना कापी	इस पुराने बलुवे को
ने पुरना कारा कोन्डे	इस पुराने फर्से को
सेकड़ा	जल्दी
नेया को लेसेर औवेमे।	इनकी धार तेज कर लाओ
अबु हिजु: सेनो: होरा कोरे	हमारे आने के रास्ते में
जनुम दरू दो दरु तना	कंटीले वृक्ष बढ़ रहे हैं
जनुम जूँड़ को लाटा तना	कंटीली झाड़ियाँ पनप रही हैं
सला-सला तेबु म: गिड़ीया	चुन-चुन कर काट फेकेंगे
तुद् पटुब् गिड़ीयाबु	समूल उखाड़ फेकेंगे
तोबे रे एनङ दङ होरा को तबु	तभी हमारे रास्ते
पयला करन तैयुगा।	सदा साफ रहेंगे।

—बारूडीह, 18 सितम्बर, 1969।

65. अलङ : हम दोनों

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
अलङ नेका हिरिति जन	हम दोनों इस प्रकार हिल मिल गए
अलङ नेका पिरिति जन,	हम दोनों की प्रीति इस प्रकार है
जाँ मुसिङ दोलङ बपागे रेदो	अगर कभी हम दोनों का अलगाव हो जाय
जेता मुसिङ दोलङ रपड़ा रेदो	अगर कभी हमदोनों का बिलगाव हो जाय
जेता लेकारे कलङ रिपिड़िङा।	(तो) कभी एक दूसरे को हम नहीं भूलेंगे।
जी मोन लङ गलङ जन	हम दोनों का मन–प्राण गुँथ गया
लन्दा जगर लङ हपल जन,	हँसी और बोली भी एक दूसरे को सौंप दिए
दुकु सुकु रेलङ अपानुवा	दुख और सुख में एक दूसरे की सेवा करेंगे
जेता लेका रे कलङ सिपिगिदा।	भूख प्यास में एक दूसरे का सहारा देंगे
नेकागे तैनो: जी दो मेनो:	कभी भी एक दूसरे को हम कष्ट नहीं देंगे।
जौ लङ जुगुय मिदड रेगे मेनो:,	मन तो इसी प्रकार रहने का करता है
मेन्दो मुसिङ सेनो: होब: ओअरे	सदा इसी प्रकार एक साथ युग बिताएँ
सुकु दुकु जोता देया केतेरे	लेकिन एक दिन तो चलना ही होगा
ओकोय अयर आकोय तयोम तेरे।	सुख–दुख सबको पीछे छोड़कर
ने जमा जिनिद् रेगे दे	(हाय!) कौन आगे और कौन पीछे (जायगा)
रोवा तुक: लङ बुगिन हिता गे,	इस दोनों की मिली–जुली जिन्दगी में ही
ओको मुसिङ ओमोन दरु जन रे	हम दोनों अच्छा बीज रोप कर जाएँ
जेता मुसिङ बा जो जन रे	कभी उग जाने पर, पेड़ बन जाने पर
हिजु: सेनो: होड़ो को नुतुमेय रे।	किसी दिन फूल और फल लगने पर
अञ अयर सिदा जन रे	आने–जाने वाले लोग नाम करेंगे।
अम तयोम टुन्डु जन रे,	यदि मैं पहले ही जाता
अञ: नुतुम मेद्द: जोरोयमेरे	(और) तुम पीछे,
बोंगा कोचा रे इलि तिलञ मेरे	(तो) मेरा नाम से आँसू गिराओ
गिति: दुडुम कुमु कुलिञ मेरे।	देवस्थान पर हँड़िया अर्पण किया करो
अम अयर सिदा जन रे	(और) सोते समय स्वप्न में मुझको पूछो।
अञ तयोम टुन्डु जनरे,	(और अगर) तुम पहली हो गई
अम: नुतुम मेद्द: अञ जोरोयरे	(और) मैं पीछे
गोवारियञ सिङबोंगा जीरे	(तो) मैं तुम्हारे नाम आँसू गिराऊँगा
ओड़ो: तयोम तेलङ नपमो: कारे।	मन में सिंगबोंगा से प्रार्थना करूँगा
	(ताकि) फिर हमदोनों की बाद में
	मुलाकात हो जाय।

—चाइबासा, मार्च 31, 1968।

66. सुगड़ा रे प्रिये

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
एंगा अपु दुलड़ा रे	माता पिताओं के दुलार में
हगा बरे सुगड़ा रे	भाई बन्धुओं के प्यार में
बले: मुलु: चंडु: लेका	नये चाँद की भाँति
मुलु: लेनम सुगड़ा रे।	प्रिये! तुम उदित हुई थी।
हतु हटिया दुड़ा कोरे	गाँव गलियों की धूल पर
जुड़ी गाती सोंगोती रे,	अपनी सहेलियों के संग में
पोनइ चंडु: लेका बोले	पूर्णिमा के चाँद की भाँति
मता जनम सुगड़ा रे।	प्रिये! तुम बढ़ गई।
जुड़िया कमगे मोनिञारे	जोड़ी में किये रहने का मन करता है
गातिया कमगे सनाञारे,	गले में हाथ डाले रहने का दिल करता है
लेलाकमगे लेपेल रे	नजर में तुम को देखते रहने की
मेनेया मोन सुगड़ा रे।	प्रिये! मन को इच्छा होती है।
जी कुसी तम मेन: रे	दिल से अगर तुम खुश हो
मोन राजी तम मेन: रे,	मन से अगर तुम राजी हो
पोनइ चंडु: मेद् मुणा	(तो) तुम्हारे पूर्ण चंद्रवत मुखड़े को
चो: ओ लेमञ सुगड़ा रे।	प्रिये! मैं चूम लूँ तुमको

—बारुडीह, सितम्बर 1968

67. जी तञ मेरा मन

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
बुरु गड़ा परोम रे	—पहाड़ी नदी के पार
हन बुरु टिकुरा रे,	उस पहाड़ की चोटी पर
एते: सुड़ि रुड़ि रुतु सड़ि तन	सुड़ी–रुड़ी बाँसरी बज रही है
गुतु तन जी तञ दो रे।	मेरा मन विंध रहा है।
अ:ए गे देरङ ओरोङे,	—शायद वही (बांसुरी) बजा रहा होगा
मिसा–मिसा एते: दुरड़े,	कभी–कभी वह गा भी रहा है
जी तञ दो चिते अलय–बलया	न जाने क्यों मन व्याकुल हो रहा है
बुले तन जी तञ दो रे।	मेरा मन मदमस्त हो रहा है।
जी तञ सेर तना रे,	—मेरा मन गल रहा है
मेद् ते मेद्द: परिड़ि तना रे,	आँखों मे आँसू टपक रहे हैं
न जरगिद: अञ गे ईरा तन	बरसता पानी भी मुझको ही परेशान कर रहा है
लेया तन जी तञ दो रे।	मेरा मन घुल रहा है
अपोरोबन रेदो होनङ रे,	—पंख अगर मुझको होता
कचिञ अपिर जन चिमतङ रे,	(तो) कब को उड़ गई होती
गड़ाओ तिसिङ गे होरा रमे: ठोर केद	नदी को भी आज ही रास्ता रोकने की सूझी
बलु तन जी तञ दो रे।	मेरा मन पागल हो रहा है।

—राँची, सितम्बर 1976

68. अञ: नसिब ओनेल : मेरे भाग्य की रेखा

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
अञ: नसिब बैतनि: गा	—मेरे भाग्य के विधाता
अम गे देरङ सिंग जा बोंगा,	शायद तुम्हीं सिंगबोंगा भगवान हो
उदुबञ में गा	तुम्हीं बताओ
चुंडुलञ मे गा	तुम्हीं इंगित करो
अञ: नसिब ओनोल सोजे चि गन्डे।	मेरे भाग्य की रेखा सीधी हैं या टेढ़ी।
अञ: नसिब गन्डे रेदो गा	—मेरा भाग्य अगर टेढ़ा है
कोले काते ओणा कन रेदो गा,	किसी प्रकार से अगर कोई त्रुटि है
एना अमगे इतुवन	(तो) उसको तुम्ही जानते हो
एना अमगे सरियन	तुम्हीं को मालूम है
अञ: नसिब ओनोल अमगे ओल तना।	(क्योंकि) मेरे भाग्य की रेखा तुम ही आंकते हो।
मुण्डा मुण्डि: अदे केद गा	—मुण्डा अपनी आशा खो चुका है
सोबेन अम: रे: जिमा केदा,	सब कुछ तुम पर ही सौंप दिया है
न: दो अमगे इतुवन	अब तो तुम्हीं जानते हो
न: दो अमगे सरियन	अब तो तुम्हीं को मालूम है
अञ: नसिब ओनोल सोजे चिम गन्डे।	मेरे भाग्य की रेखा को तुम सीधी करोगे या टेढ़ी।
सनङ होनङ तञ: निमिनङ गेगा	—इच्छा मेरी सिर्फ इतनी ही है
जिनिद वारि जीञ नमे कगा,	(कि) इस जीवन में मुझको चैन मिले
होन–बुड़ी कोलो: गा	परिवार वालों के साथ
कुटुम कुपुल कोलो: गा	(तथा) भाई एवं कुटुम्बों के साथ
अञ नसिब ओनोल निमिनङ ओल तम चा।	मेरे भाग्य की इतनी रेखाएँ अंकित कर दो।

—बारुडीह, दिसमबर 1972

69. तिसिङ सकिङ : दोस्त आज!

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
उरिः गुपि रे तिसिङ	गाय चराते वक्त आज
लेल लेद मञ सकिङ,	दोस्त, मैंने तुमको देखा था
बुरु जोला रे	पहाड़ की तराई में
दिरि टुकु रे	पत्थर के बड़े टिल्हे पर
दुबे दुबेम दुरङ केन जीरे।	बैठे–बैठे ही गा रहे थे तुम मन में।
सुकु तेचि रसिका ते	सुख से या आनन्द से
दुकु तेचि इयम ते	दुख से या पश्चाताप से
बुरु जोला रे	पहाड़ की तराई में
दिरि टुकु रे	पत्थर के बड़े टिल्हे पर
दुबे दुबेम दुरङ केन जीरे।	बैठे–बैठे ही गा रहे थे तुम मन में।
मेद रे तम मद्दः	आँखों में तुम्हारे आँसू जल
पिरिल–पिरिल चिलका अरिल दः	ओले के पत्थर जैसे गल रहे थे
बुरु जोला रे	पहाड़ की तराई में
दिरि टुकु रे	पत्थर के बड़े टिल्हे पर
दुबे दुबेम दुरङ केन जीरे।	बैठे–बैठे ही गा रहे थे तुम मन में।

—बारुडीह, जुलाई 71

70. जू तञ : जाओ मेरी

(राग–मागे)

मूल

जुआ चिटी ओटङ मेया, गतिङ तीरे हड़गुन मे
सोबेन सुकु–दुकु अञः सेटेर तुकइ मे।।
तड़य तिः ते हम्बुद मया, चंडुः मोचातेः चोः ओ मेया
लेगेन कोयोङ कोयोङ रेगेः कोयोङ मेगेया।।
अलोम बोरोय मिसव रटी, उटी–सुटिः ओटः मेया
अए लोः गितिः गुंगुद हम्बुद रे सुकुम नमेया।।
कनेः ओटः दपल मेया, ओड़ोः कनेः चोःओ मेया,
गतिङ जी रे—, पेरे रसी तञ जोरो तुका मेया।।

भाषान्तर

जाओ चिठ्ठी उड़ जाओ, मेरी प्रियतमा के हाथ में उतरो
(और) मेरे सारे सुख–दुख को उस तक पहुँचा दो।
(जब पहुँचोगे तो) वह कमल–करो से अपनी छाती पर दबायेगी
और चन्द्र मुख में चूमेगी

(और) सुकोमल गोद में तुमको बैठायेगी।
डरो नहीं कभी, तुमको उलट करके सहलायेगी
उसके हाथ सोने में और बाहु–पाश में तुमको सुख मिलेगा।
तुमको वह बार–बार उलट–पलट करेगी तथा चूमेगी
जाओ, मेरी प्रियतमा के हृदय में प्रेम का रस टपका आओ।

राँची—दिसम्बर 74

71. विदा दुरङ : विदा गान

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
होरा गेले लेल होरा केन, अम गेचा दरोम, नगेन, लोटा रे दः, बा माला तीरे दरोम दुरुङ चले दुरङ केन जीरे।	राह ही हम देख रहे थे आपके स्वागत के निमित लोटे में पानी और फूल माला लिए (और) हृदय से स्वागत गान गा रहे थे।
हिजुः लेनम बोंगा लेका, तुरे लेनम गिगिलेका, ने नुबः गुयु तले नुबा गाते अङ मर्शल जना अम दोरोसोन ते।	आप आये देवता की भांति सूर्य की तरह आप उदित हुए अंधकार में पड़ी यह अंधेरी झोपड़ी आपके दर्शन पाते ही उजाला हो गई।
जीदो मेनोः अलोम सेनोः, ने मेदाते अलोम अदोः, मेन्दो अमदो दिसुम दीया तनिः रे सोबेन को नङ होरा उदुब तनिः रे।	मन करता है मत जाइये इन आँखों से मत ओझलिये पर आप तो देश के दीप्तकर्त्ता हैं सब के लिए पथ प्रदर्शक है।
सेनोः में मर जू रसिकालोः, होटोः रः ने बा हिसिर लोः, हिसिर लोः गे नुतुमो तल हिसिर जम न रचा रेयो जुड़ी मंडा मंडा जम।	जाइये, सोल्लास जाइये गले के इस पुष्पहार के साथ, हार के साथ हमारे नाम भी पहनते जाइये (तथा) इस आंगन में जोड़ा पद् छापा भी छोड़ते जाइये।

—बारुडीह, जुलाई 70

72. सेनोगबु मिसते : हम साथ जाएँगे

मूल	भाषान्तर
जेटे कले कले रे	जेठ (गर्मी) की गर्मी में
होयो हुलु हुलु रे	हवा की कंपकपी में भी
कबु बपागेया	हम एक दूसरे को नहीं छोड़ेंगे
होंबु तपँगिया	एक दूसरे की प्रतीक्षा करेंगे
सेनोगबु मिसाते जमा-जमा।	मिल कर हम लोग साथ जायेंगे।
ने होयो दुरुगर रे	इस धूल भरी आँधी में
बोरो बोरो गेय जीरे	मन में डर लगता है
जिलिङ् सेरेङ् रेगे	इस लम्बे चट्टान पर ही
कजि केटे: लेते	(आओ) हम बात पक्की कर लेंगे
सेनो गबु मिसाते जमा-जमा।	मिलकर हम लोग साथ जायेंगे।
जुगुबातेबु जुलुङ् केन	युगों से हम चेष्टा करते आ रहे हैं
सदनी तबु पूरा लेन	हमारी साधना अब पूरी हो गई
अबुअ: जन दिसुम	देश अब अपना हो गया
मरबु उपुरूम	(इसलिए) एक दूसरे को हम पहचानेंगे
सेनोगबु मिसाते जमा-जमा।	मिलकर हमलोग साथ जायेंगे।
जी पेड़े: बु जमाया	मन-और बल हम संयोयेंगे
जाती पाती बु बगेया	जात-पात का झगड़ा त्यागेंगे
दिसुम सुगड़ नगेन	देश की सुन्दर बनाने के लिए
होरो जंगी नगेन	देश की सुरक्षा के लिए
सेनोगबु मिसाते जमा-जमा।	मिल कर हम लोग साथ जायेंगे।
तयोम कन को बु तँगी कोवा	जो पीछे हैं उनकी प्रतीक्षा करेंगे
गिड़िय कन कोबु बिरिद् कोवा	गिरे हुओं को उठायेंगे
मरबु देपेंगा	एक दूसरे की मदद करेंगे
दोबु सुपुतुगा	आगे पीछे सब साथ जायेंगे।
सेनोगबु मिसाते जमा-जमा।	मिलकर हम लोग साथ जायेंगे।
तिरंगाबु जो आरेया	तिरंगा को हम प्रणाम करेंगे
गाँधी बाबाबु गो आरिया	गाँधी बाबा की बड़ाई करेंगे
दिसुम निरालो: का	देश सुन्दर बने
मरेशला कनो: का	आलोकित हुआ रहे सदा
सेनोगबु मिसाते जमा-जमा।	मिलकर हम लोग साथ जाएंगे।

राँची, अगस्त, 1964।

73. लेल लेदमा : देखा था

(करम)

मूल	भाषान्तर
इसु हटिया होरा कोरे	कई बार गलियों और पथों में
इसु पीटि बुरु कोरे	कई बार हाथ और जतराओं में
लेल लेद मा	देखा था तुमको
सिदञ लेल लेद मा	पहले मैंने देखा तथा तुमको
रिगि-मिगि सोगोल पड़िया	रिग-मिग सुन्दर सोंगोल पड़िया वस्त्र
पुढ़ना पयला रे।	(और) झालरदार आंचल में।
चुकु बुरु बो: सुनुपिद	सिर पर गोल जुड़ा शोभता था
अन्दु पोला जिड़िब जिड़िब	पैर की अंगूठियों में पोला की सुन्दर आवाज होती थी
लेल लेद मा	देखा था तुमको
सिदल लेल लेदमा	पहले मैंने देखा था तुमको
रिगि-रिगि सोंगोल पड़िया	रिग-मिग सुन्दर सोगोल पड़िया वस्त्र
पुदना पयलारे।	(और) झालरदार आँचल में।
सुपिदरे बा नकि:	(तब) जुड़ा में फूलदान कंघी थी
मुरे मकड़ि लुतुर रे तड़कि	नाक मे मकड़ी और कान में तड़की
लेल लेद मा	देखा था तुमको
सिदञ लेल लेद मा	पहले मैने देखा था
रिगि-मिगि सोंगोल पड़िया	रिग मिग सुन्दर सोगोल पुड़िया वस्त्र
पुदना पयला रे।	(और) झालदार आँचल में।
भेद मुंडा सोरोना कन	(अब) मुखड़ा पाउडर से पुता हुआ है
कुचा मुचा सुपिद कन	जुड़ा भी अब लहरदार है
लेल केद मा	देखा लिया तुमको
तिसिङ् लेल केद मा	आज मैंने देख लिया तुमको
मल-मल साया साड़ी	मल मल साया और साड़ी में
चुड़ी घड़ी रे।	(तथा) चुड़ी एवं घड़ी में।

दुगदाबुरु, जुलाई 20, 1971

74. जेता रे कहीं भी

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
बिर रेलङ कजि लेदा	जंगल में हम दोनों ने बात पक्की की थी
बुरु मिसा तेलङा	(कि) मेला साथ जायेंगे
तंगि केनञ तंगि केन	मैं प्रतीक्षा करती रही
सपाड़तिङ होरा रे	चौराहे पर
मेन्दो कञ लेल मेया गतिङ जेता रे।	पर प्रिय! कही भी तुमको नहीं देखती।
होड़ो को हो संगिनाते	लोग दूर–दूर से
हिजु: तना को रसिकाते	आ रहे हैं आनन्द विभोर होकर
जुड़ि–जुड़ि को सेना कदा	जोड़ी बद्ध होकर चले हैं
एन सुड़ि होरा रे	उस पहाड़ी पथ पर
मेन्दो कञ लेल मेया गतिङ जेतारे।	पर प्रिय! कहीं भी तुमको नहीं देखती।
ने दारु, ने बा को	ये पेड़ और ये फूल
नवा सकम सुड़ा को	ये नव पल्लव
गोसो–गोसो गेञ लेल जदा	सबके सब मुरझाये से लगते हैं
होरा गेना रे	पथ के किनारे
मेन्दो कञ लेल मेया गतिङ जेतारे।	पर प्रिये! कहीं भी तुमको नहीं देखती।
अहो ने चेणे रन:	ओह! इस चिड़िया का रोना
चिकन: कोए उदुब तन	न जाने क्या बता रही है
ओको कोचा रेहोम उकुवा कन	किस कोने में तुम छिपे हो
सुगड़ा सोना रे	ऐ सोना सा प्रिय!
मेन्दो कञ लेल मेया गतिङ जेतारे।	पर प्रिय! कहीं भी तुमको नहीं देखती।

अनिगड़ा, अक्टूबर 67

75. हगा को तञ ओ मेरे भाइयो

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
एलारे तञ हगा को	आओ मेरे भाइयों
जोअर जगर को: आबु,	राम सलाम करके बात चीत करेंगे
इसु संगिनातेञ हियाकन	मैं तो बहुत दूर से आ रहा हूँ
अपे रचा रे	आप के आंगन में
ने अपे दुवर रे	इस आप के दरवाजे पर
दुकु सुकु कोबु जपागर।	दुख–सुख की बात करेंगे।
अञो बुसु: गुयुरेनि:	मैं भी फूस के घर का हूँ
अपेयो बुसु: गुयु रेनको,	आप सब भी फूस के घर के ही हैं
अबु दोबु हगा बोया कन	हम सब तो बन्धु बांधव हैं
एला पन्ती रे	आओ पंक्ति में
ने अपे रचा रे	इस आप के आंगन में
दुकु सुकु कोबु जपागर।	दुख–सुख की बात करेंगे।
अञो सिउ: चलु: नि:	मैं बी जोतने कोड़ने वाला हूँ
अपेयो सिउ: चलु: को,	आप लोग भी जोतने कोड़ने वाले हैं
जिनिद होरा तबु सेयाकन	जीवन–पथ तो हमारा एक सा ही है
ओते दिसुम रे	इस धरती पर
ने गोड़ा पिड़ि रे	इस खेत और मैदान में
दुकु सुकु कोबु जपागर।	दुख–सुख की बात करेंगे।
अबु अबुबु उपुरुम	हम आपस में एक दूसरे को पहचानें
ओड़ो: कबु रिपिड़िङ,	(और) कभी नहीं बिसारेंगे
नेया कजि मुन्डए उदुबतन	इसी बात को मुण्डा बता रहा है
अपे रचा रे	आपके आंगन में
ने अपे दुवर रे	इस आपके दरवाजे में
दुकु सुकु कोबु जपागर।	दुख–सुख की बाद करेंगे।

—डांक बंगला बाघ (म0 प्र0), जनवरी 69।

76. सुकु होरा सुख का मार्ग

(राग–करम)

मूल	भाषान्तर
जिदन जाला ताला रे,	जिन्दगी के जंजाल में
दिसुम साला संगोम रे,	देश को संवारने सजाने में
देला बोदे देनु एटे:या	आओ शीघ्र हम शुरू करेंगे
हगा मिसि को	भाई–बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
जती मरतीबु पितिलेया,	जरा हम समाज को परख लें
सरती छिति–बिति गेया,	सचमुच में तितर बितर हो गया है
देला बोदे देबु सँगोमेया	आओ शीघ्र हम संवारेंगे
हगा मिसि को	भाई–बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
जमा–जमा जमा कनरे,	जब सब जमा होकर
मित् रे सुसुन दुरङ् तन रे	एक में नाचते गाते होते हैं
मरती कचि चिमिन रसिक:	तो सोचो, कितना आनन्द आता है
हगा मिसि को	भाई–बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
गड़ा हुअङ बुरु चोरद,	नदी, घाटी एवं पहाड़ की तराई
सोंकोटोगे टयद–टयद	सर्वत्र संकट ही संकट है
सेणा पेड़े: तेबु हरेया	इसको हम ज्ञान और बल से हटायेंगे
हगा मिसी को	भाई–बहनों!
सुकु होरा देबु सेबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
नुतुम रे रड़ी बड़ी जती,	नाम में विभिन्न जातियां हैं
मेन्दो सोबेन मनवाजती,	लेकिन सभी मानव वर्ग के हैं
जती पती कबु कपाजिया	जात–पात का बखेड़ा नहीं करेंगे

हगा मिसी को,	भाई-बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
हिरिति होराबु सेसाया,	मेल-प्रेम का पथ प्रसस्त करेंगे
चिलन चेन्टाबु बगेया,	छुआछूत और विद्वेष त्यागेंगे
दिसुम रे जतीबु उबारेया	देश में मानव जाति का उत्थान करेंगे
हगा-मिसि को	भाई-बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।
बुगिन कजि कमि कोरे,	अच्छी बात और अच्छे कामों में
अलोम: मुन्डा पजिन नेरे,	"मुण्डा" दुश्मनी मत करो
संगोते सोबेन तेबु नितिरेया	सब मिल कर सफल बनायेंगे
हगा मिसी को	भाई-बहनों!
सुकु होरा देबु सबेया।	सुख का मार्ग अपनायेंगे।

—बारूडीह, अक्टूबर 1970